खेजड़ली बलिदान

नाटक

लेखक
जगन्नाथ गेदर 'सेवक'
सेवा निवृत्त शिक्षक
मु. पो.–मांदला, जिला–हरदा
(मध्यप्रदेश)

प्रकाशक
जाम्भाणी साहित्य अकादमी

''श्री विष्णवे नमः''

खेजड़ली बलिदान

नाटक

लेखक: जगन्नाथ गेदर 'सेवक'

प्रकाशक : जांभाणी साहित्य अकादमी
सैक्टर-1, ई-134, जयनारायण व्यास कॉलोनी
बीकानेर, (राजस्थान)
Email - jsakademi@gmail.com
Website-WWW.Jambhani.com

तृतीय संस्करण : सन् 2014

मूल्य : /-

ISBN : *978-93-83415-11-3*

© : जांभाणी साहित्य अकादमी

-: मुद्रक :-

Khejrli Balidan by
Jagnnath Gedar
Pages : 80

प्रकाशकीय

श्री जगन्नाथ गेदर जी द्वारा लिखित यह खेजड़ली बलिदान नाटक पूर्व में लेखक द्वारा प्रकाशित किया जा चुका है। इस समय यह पुस्तक उपलब्ध नहीं है तथा इस नाटक की अति मांग होने के कारण जाम्भाणी साहित्य अकादमी द्वारा इसे पुनः प्रकाशित किया जा रहा है।

आधुनिक समय में दिनों-दिन पर्यावरण प्रदूषण होता जा रहा है। सुविज्ञजन अनेकोपाय ढूंढ़ते जा रहे हैं, किन्तु विकास की अन्धी दौड़ में प्रयास विफल होते जा रहे हैं। समय की पुकार है कि हरे वृक्षों की रक्षा की जावे और नये वृक्ष लगाये जायें। वन और वन्य जीवों की रक्षा की जाये। इस धरती पर छत्तीस प्रतिशत घने वृक्ष होने चाहिये, किन्तु कुछ राज्यों को छोड़कर सर्वत्र शून्य ही है। यदि इस प्रकार से विकास की दौड़ में वन कटते जायेंगे, तो वह दिन दूर नहीं होगा, जब विनाश लीला होने वाली है। कहीं-कहीं हो भी रही है।

विक्रम सं. 1787 में भादवा सुदि दसमी के दिन विश्व में अपूर्व घटना घटी थी। जिसमें 363 नर-नारियों ने खेजड़ी वृक्ष की रक्षार्थ अपने प्राणों की बलि दी थी। वह स्थान जोधपुर से 16 मील (22 कि.मी.) दक्षिण में खेजड़ली ग्राम से जाना जाता है। उस महान् अपूर्व घटना का आँखों देखा वर्णन कवि गोकुल जी ने अपनी साखी **''पल पालण पिसण''** में किया है। उसी का ही विस्तार कवि साहबरामजी ने अपने ग्रन्थ जम्भसार में किया है। इन्हीं का आधार लेकर आधुनिक लेखक जगन्नाथजी गेदर ने यह खेजड़ली बलिदान नाटक लिखा है।

धर्म और शूरवीरता का संयोग इस नाटक के द्वारा पूर्णरूपेण प्रकट हुआ है। अच्छे कलाकारों द्वारा यदि इसकी प्रस्तुति की जाये, तो मैं समझता हूँ कि दर्शक अवश्य ही धर्म की गहराई में डूबेंगे। अपने हृदय में धारण करने को मजबूर होंगे। जहाँ शूरवीरता के सम्बन्ध में कवि ने शे'र और राधेश्याम तर्ज में पात्रों द्वारा वाक्य बुलवाये हैं वे तो निश्चित ही रोंगटे खड़े करने वाले होंगे। भले ही कुछ समय के लिये ही क्यों न हो, एक बार तो वह दृश्य देखने-सुनने से दर्शक अवश्य ही प्रभावित हुए बिना नहीं रहेगा।

सवाल यह उठता है कि इतनी बड़ी घटना, जिसमें 363 नर-नारियों ने अपनी स्वेच्छा से प्राणों का बलिदान दे दिया, किन्तु इस घटना का वर्णन राजस्थान के इतिहास में कहीं नहीं आया है। केवल जाम्भाणी साहित्य में ही वर्णन आया है। वहाँ के पुराने लोगों द्वारा भी परंपरा से सुनते आये हैं। खेजड़ली बलिदान में शामिल उन चौरासी गाँवों में अब भी किसी शुभ अवसर पर चिट्ठी भेजी जाती है तथा वह स्थान जहाँ पर बलिदान हुए थे, वह वहाँ के लोगों ने ही तो बताया था। जहाँ पर खेजड़ली गांवें में अब हर वर्ष उन शहीदों को श्रद्धा सुमन अर्पित करने के लिये लाखों लोग आते हैं मेला लगता है। यही सबसे बड़ा प्रमाण है।

उस समय के अन्य कवि-लेखक राजा के अधीन होते थे। राजा कभी ये बातें लिखने ही नहीं देते थे। आज की तरह स्वतंत्र पत्रकारिता उस समय नहीं थी। राजा के द्वारा पालित-पोषित पत्रकार, कवि, लेखक से कैसे आशा की जा सकती है? लेकिन राजा को यह पता नहीं था कि किसी कोने में बैठे हुए गोकुलजी इस घटना को लिख रहे हैं। यही कारण है कि राजस्थान के इतिहास में इस घटना का जिक्र नहीं है। परन्तु जाम्भाणी साहित्य में इसका प्रचुरता से वर्णन हुआ है।

जगन्नाथ गेदर जी का प्रयास सफल है। कई बार इस नाटक का मंचन भी हो चुका है। आगे भी हम आशा करते हैं कि इसका मंचन होना चाहिये। यह जनजीवन में प्रभाव अवश्य ही करेगा। इसमें पूर्व की कुछ अशुद्धियाँ थी। उनको ठीक करके ज्यों का त्यों प्रकाशित किया जा रहा है। ''गेदर जी'' जन्मजात बिश्नोई नहीं थे, किन्तु कर्म से सच्चे बिश्नोई थे। जाम्भाणी साहित्य अकादमी की तरफ से इस नाटक का प्रकाशन ही सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

निवेदक
आचार्य कृष्णानन्द
अध्यक्ष ,जाम्भाणी साहित्य अकादमी
बिश्नोई मन्दिर, ऋषिकेश
मो. 09897390866

रूँख है धरती रो सुहाग।
रूँख रे मती लगाइजो दाग।।

जठै हुवै नीं लीलो बाँठ।
बठै पड़ै नीं मेह री छाँट।।

भूमिका

आज विश्व में पर्यावरण के अन्तर्गत प्राणी मात्र के हित में जीपनोपयोगी शुद्ध जलवायु प्राप्ति हेतु वृक्ष रक्षा के लिये अनेक अभियान चलाये जा रहे हैं। विगत वर्षो में जब से हरे वृक्ष कटने लगे हैं, तब से शुद्ध जलवायु का अभाव प्राय: जीव मात्र को खटकने लगा है। देश में अनेक बीमारियाँ प्राणियों पर अपना आधिपत्य जमा रही हैं।

आज से 500 वर्ष पूर्व श्री बिश्नोई धर्म के प्रणेता भगवान् जम्भेश्वर ने मारवाड़ की रेतीली भूमि से जहाँ विशेषकर वृक्षों का अभाव है; वर्षा भी कम होती है और समय-समय पर वहाँ अकाल पड़ जाया करते हैं, वृक्षारोपण एवं वृक्ष रक्षा का अभियान चलाया था। 20+9 ऐसे उनतीस नियमों की आचार संहिता बनाई, जिनके पालन मात्र से बिश्नोई कहलाते हैं। इन नियमों में सत्रहवाँ नियम वृक्षारोपण तथा वृक्ष रक्षा करने का है। इन नियमों के पालने की योगेश्वर ने अपने अनुयायियों से दृढ़ प्रतिज्ञा करवाई थी। यहाँ तक कि प्राण चले जाये, परन्तु वृक्ष न कटने पाये। बिश्नोई मात्र इन नियमों का दृढ़ता से पालन करता है।

समय-समय पर कई वीर बिश्नोइयों ने स्वयं को बलिदान कर, वृक्षों एवं जीवों की रक्षा की है और करते भी जा रहे हैं। जोधपुर से 22 किलोमीटर दूर खेजड़ली ग्राम के बलिदान की घटना अपूर्व एवं सर्वश्रेष्ठ मानी जाती है। यह घटना भादवा सुदी 10 वीं सम्वत् 1787 की है। यहां भगवान् जम्भेश्वर की सत्प्रेरणा से बिश्नोइयों द्वारा रक्षित खेजड़ियों का एक बड़ा बगीचा था और इसी से इस ग्राम का नाम खेजड़ली पड़ा है। तत्कालीन जोधपुर नरेश श्री अभयसिंह जी ने अपने ही राज्य में बिछियागढ़ नामक स्थान में किला बनवाया था। चूने के अभाव में किले का कार्य अधूरा था। चूना लकड़ियों से पकाया जाता था, इसलिये लकड़ियों की आवश्यकता पड़ी।

राज्य के महामंत्री श्री गिरधरदास भण्डारी के बहकावे में आकर

नरेश ने खेजड़ली ग्राम में अपनी सेना भिजवाकर वृक्ष कटवाने चाहे। परन्तु वहाँ ग्राम के छोटे-बड़े, स्त्री-पुरूष 363 वीर बिश्नोई वृक्षों पर अपनी गर्दन रखकर बलिदान हो गये, परन्तु वृक्ष नहीं काटने दिये।

इस अपूर्व बलिदान की सूचना जब राजा श्री अभयसिंह जी को मिली तब वह लज्जित होकर खेजड़ली ग्राम में आये और इस अपराध की बिश्नोइयों से क्षमा याचना की तथा अपने राज्य में वन्य प्राणी एवं वृक्षारोपण, वृक्ष रक्षा की घोषणा की। भविष्य में उनके राज्य भर में न तो कोई वन्य प्राणी मात्र को मारेगा और न हरे वृक्ष ही काटेगा। जीव हिंसा करने तथा वृक्ष काटने वाला व्यक्ति राज्य का अपराधी माना जावेगा। उसे दण्ड दिया जावेगा।

वर्तमान में राजस्थान में खेजड़ी वृक्ष को राज्य वृक्ष की मान्यता प्राप्त है।

ऊपर लिखी घटना को मैंने नाटक का रूप दिया है। यह नाटक मेरे निर्देशन में अखिल भारतीय बिश्नोई मेलों के शुभ अवसरों पर मंचन किया जा चुका है। इस नाटक को देखकर लोग विशेष प्रभावित हुए।

इस नाटक में कुछ कविताएँ स्वरचित और कुछ कविताएँ अन्य ग्रन्थों का आधार लेकर लिखी गई हैं। वर्तमान में पर्यावरण के अन्तर्गत सुधार की दौड़ में यह नाटक विशेषकर सिद्ध होगा। बिश्नोई गौरव को बढ़ायेगा। ऐसी पूर्ण आशा है।

पाठकगण! त्रुटियों की तरफ अपना ध्यान न देते हुए इसका पठन-पाठन एवं मंचन कर लाभ उठायेंगे, तभी मैं अपने इस किये गये परिश्रम को सार्थक समझूँगा।

प्रथम संस्करण
आसोज मेला, मुकाम
वि. सं. 2042 (सन् 1985)

विनीत :
जगन्नाथ गेदर 'सेवक'
सेवा निवृत शिक्षक
मांदला (म. प्र.)

।।श्री गुरु जम्भेश्वराय नमः।।

खेजड़ली बलिदान नाटक
(पात्र सूची)

-: पुरुष पात्र :-

1. गणपति
2. सूत्रधार
3. प्रार्थी (कोई भी तीन)
4. महात्मागण- (1) गोकुलजी (2) रासानन्द जी (3) हरिनन्द जी
5. ग्राम सेवक
6. चारों भाई - (1) अणदा (2) ऊदा (3) कान्हा (4) किसना
7. जोधपुर नरेश - श्री अभयसिंहजी
8. दूत - एक व दो
9. मंत्री - गिरधरदास
10. सैनिक - एक व दो।
11. (1) मौलवी (2)विद्वान् - श्री पंडितजी
12. ग्रामवासी - (चार व्यक्ति)
13. अमरा
14. रतना

-: महिला पात्र :-

1. नटी
2. सरस्वती (1) रिद्धि (2) सिद्धि
3. कान्ही, काली, रावणी बैनिवाल
4. पुत्री-दामी, चीमा, इमरती
5. करमा, गौरां
6. पदमल (अमरा की पत्नी)

-: संवाद सूची :-

(1) श्री गणपति प्रार्थना।
(2) सरस्वती प्रार्थना।
(3) सूत्रधार-नटी संवाद।
(4) परस्पर महात्माओं का विचार-विनिमय।
(5) ग्रामसेवक-महात्मा संवाद।
(6) ग्राम सेवक द्वारा ग्राम में सूचना देना।
(7) महात्माओं एवं ग्रामीणों द्वारा सामूहिक हवन।
(8) महात्मा गोकुलजी द्वारा वृक्ष रक्षा पर उपदेश।
(9) हरिनन्द जी द्वारा वृक्ष रक्षा पर उपदेश।
(10) अणदा, कान्हा, किसना और उदा द्वारा।
(11) अमृता, दामी, चीमा, करमां, और गौरां द्वारा वृक्ष रक्षा के लिये प्रतिज्ञा करना।
(12) जोधपुर नरेश श्री अभयसिंह और दूतों का संवाद।
(13) श्री गिरधरदास महामंत्री और नरेश श्री अभयसिंह संवाद।
(14) करमां और गौरां द्वारा खेजड़ी वृक्ष पर सामूहिक गान।
(15) दामी, चीमा और दूत संवाद।
(16) महामंत्री गिरधरदास, दामी, चीमा और इमरती द्वारा संवाद।
(17) गिरधरदास-दूत संवाद।
(18) जोधपुर नरेश अभयसिंह और महामंत्री गिरधरदास संवाद।
(19) विद्वान् पंडित मौलवी और जोधपुर नरेश संवाद।
(20) अमृता, दामी, चीमा और गिरधरदास संवाद।
(21) अणदा, कान्हा, किसना, उदा संवाद।
(22) गिरधरदास, करमां, गौरां संवाद।
(23) गिरधरदास और दूत संवाद। (24) अमरा, पदमल, रतना संवाद।
(25) गिरधरदास दूत संवाद। (26) श्री अभयसिंह-दूत संवाद।
(27) अभयसिंह और बिश्नोइयों का संवाद एवं नरेश का परवाना लिखना (सामूहिक गान)
(28) खेजड़ली भूमि प्रशंसक गीत। (29) खेजड़ी की आरती।

खेजड़ली बलिदान नाटक

पहला दृश्य

स्थान - गणपति मन्दिर

(सूत्रधार, नटी और तीन पात्र दूसरों के द्वारा प्रार्थना करना। रिद्धि एवं सिद्धि का गणपति के दोनों ओर चंवर ढुलाना।)

गणपति प्रार्थना

विघन हरण गणराव जय जय।
विघन हरण गणराव जय जय।।टेक।।
रणत भंवर से आप पधारो,
आकर के कारज सब सारो।
रिद्धि सिद्धि को संग लाव जय जय।।१।।
पारवती के पुत्र कहावो,
चार भुजा मन मोदक लावो।
शिवजी के मन भाव जय जय।।२।।
आज सभा में रंग बरसाना,
तुम बिन प्रभु नहीं लगे ठिकाना।
आकर कार्य बनाव जय जय।।३।।
विघन हरण गणराव जय जय।।

गणपति (तर्ज-राधेश्याम)

कैलाश मेरु पर रहता हूं, गणराज नाम प्रख्यात मेरा।
हे सेवकगण ये बतलावो, किस लिये आज मुझको टेरा।।
कहो कहो तुम शीघ्र कहो, झट कहो विलंब न लाऊँ मैं।
जिस कारण मुझे पुकारा है, वह इच्छा पूर्ण कराऊँ मैं।।

अर्थ

गणपति - अहा हे सेवको! इस समय मैं कैलाश पर्वत पर बैठकर, पिता श्री शंकर जी का ध्यान कर रहा था कि तुम्हारी करुण पुकार मेरे कानों तक पहुँची। मैं चौंक पड़ा और वैसे ही तुम्हारी तरफ चल दिया-अहा हे सेवकों! आप क्या चाहते हो? शीघ्र कहो, जिससे कि मैं तुम्हारी

मनोकामना पूर्ण कर सकूँ।

सूत्रधार (तर्ज-राधेश्याम)

सूत्रधार - हे देव सुनो कर जोड़ कहें, हम कलि के जीव दुखारे हैं।
इसलिये छोड़ सब चिंता को, अब आकर पड़े दुवारे हैं।
नटी - तुम रिद्धि सिद्धि के दाता हो, सनकादिक तुम्हें मानते हैं।
शिव ब्रह्मा श्री विष्णु देव भी, तुमको प्रथम बुलाते हैं।।

अर्थ

सूत्रधार - अहा हे स्वामी! आज हम इस रंग-मंच पर बिश्नोई धर्म संबंधी नाटक करके दिखाना चाहते हैं। नाटक निर्विघ्नता पूर्वक सम्पन्न हो जाये, इसी के लिये आप की सेवा में टेर लगाई है।
नटी - अहा हे स्वामी! अब हमें वही आशीर्वाद देवें कि हम आज नाटक को सफलता पूर्वक कर सकें।

(तर्ज - राधेश्याम)

गणपति - हे सेवको नाटक करने की, तुमने मन में धारी है।
जाय निडर हो कार्य करो, यह शुभ आशिष हमारी है।।
अर्थ - हे सेवको! आज रंग मंच पर आपने श्री बिश्नोई धर्म सम्बन्धी नाटक करने का जो मन में विचार किया है, वह समय के मान से उत्तम है। अहा हे सेवको! जाओ! निडर होकर नाटक का कार्य प्रारम्भ करो। कार्य में किसी प्रकार का विघ्न नहीं पड़ेगा, यही हमारा शुभ आशीर्वाद है।

(तर्ज राधेश्याम)

गणपति- हे भक्तो! नाटक करने की, तुमने मन में जो धारी है।
जाय निडर हो कार्य करो, यह शुभ आशिष हमारी है।।
अब नाटक के करने में कोई, नहीं विघ्न आ पायेगा।
कृपा दृष्टि से मेरी, वह अपने ही आप टल जायेगा।

दूसरा दृश्य

(सरस्वती प्रार्थना)

गणपति की तरह सरस्वतीजी की प्रार्थना करना।

प्रार्थना

वीणा वादिनी वर दे जय जय।

वीणा वादिनी वर दे जय जय।।
अमल कमल आसन आसीना।
विद्या बुद्धि विवेक प्रवीना।।
नूतन प्रकाश स्वर दे जय जय।
वीणा वादिनी वर दे जय जय।।१।।
हंस वाहिनी जग कल्याणी।
अमित कला सुषमा की खानी।।
शक्ति सुयश अमर दे जय जय।
वीणा वादिनी वर दे जय जय।।२।।
भगवती भारती कर में वीणा।
मंगल करती गान नवीना।
विघन सकल तू हर ले जय जय।
वीणा वादिनी वर दे जय जय।।३।।

(तर्ज - राधेश्याम)

सरस्वती - ब्रह्मलोक में बैठी थी मैं, वीणा पर तार चढ़ाती थी।
उस समय लख धीरे-धीरे, आवाज कहीं से आती थी।।
झट चौंक पड़ी चहुं ओर लखा, सेवक गण मुझे बुलाय रहे।
क्या विघ्न पड़ा बाधा घेरी, जिस कारण मुझे मनाय रहे।।
लो आ पहुंची क्या कहना है, झट कहो विलम्ब न लाऊँ मैं।
क्या क्या करना है काम तुम्हें, वह इच्छा पूर्ण कराऊँ मैं।।

अर्थ - हे सेवको! इस समय मैं ब्रह्मलोक में बैठ कर अपने पिता श्री ब्रह्माजी का ध्यान कर रही थी कि अचानक तुम्हारी करुण पुकार मेरे कानों तक पहुंची जिसे सुनकर मैं चौंक पड़ी और वैसे ही मैं तुम्हारी ओर चल दी। हे सेवको! अब यह बताओ तुम क्या चाहते हो, जिससे मैं तुम्हारी मनोकामना पूर्ण कर सकूँ।

(तर्ज-राधेश्याम)

सूत्रधार- हे माता आशिष माँगने, हमने ही तुम्हें पुकारा है।
कार्य में न कोई विघ्न पड़े, इस कारण लिया सहारा है।।

नटी- तुम विद्या की वरदानी हो, अरु वीणा पुस्तक धारिणी हो।
वह शक्ति प्रदान करो देवी, हे हंस वाहिनी माता हो।।

सूत्रधार- कमलासन पर बैठी माँ, यह आशीर्वाद हमें देवें।
इस नाटक के करने में, जो विघ्न होय सब हर लेवे।।

नटी- जो भी कार्य करे देवी, बस कृपा दृष्टि तुम्हारी हो।
होवे सफलता करने में, हर तरफ से पुष्टि तुम्हारी हो।।

सूत्रधार- दो आशीर्वाद हमें देवी, श्री जम्भ चरित्र को दिखलायें।
लख आज जिसे ये सज्जनगण, अपने मन में सुख पायें।।

अर्थ- अहा! हे विद्या वादिनी माता! हम आज इस रंग-मंच पर श्री बिश्नोई प्रांगण में श्री बिश्नोई धर्म सम्बन्धी नाटक करके दिखाना चाहते हैं।

नटी- हे हंस वाहिनी माता! इसके लिये आप हमें यही आशीर्वाद प्रदान करें जिससे हम नाटक को निर्विघ्नतापूर्वक पूर्ण कर सके।

(तर्ज-राधेश्याम)

सरस्वती- हे धन्य-धन्य मम भक्तजनो, हे धन्य तुम्हारा ज्ञान बड़ा।
है धन्य तुम्हारे भावों को, है धन्य तुम्हारा ध्यान बड़ा।।
लो आशीर्वाद तुम्हें देती, जन कल्याण कर पावोगे।
श्री जम्भेश्वर के नाटक को, निर्विघ्नपूर्ण कर जावोगे।

अर्थः- अहा हे सेवको! जाओ निडर होकर श्री जम्भेश्वर के नाटक का कार्य करो-यही हमारा शुभ आशीर्वाद है।

(बोलो सरस्वती देवी की जय)

तीसरा दृश्य

(प्रथम पट पर)

(सूत्रधार एवं नटी का पर्दो के दोनों तरफ से आकर परस्पर वार्तालाप करना)

सूत्रधार- प्रिये! प्राण प्रिये! तुम टकटकी लगाये उधर क्या देख रही हो? तुम्हारी मुख छवि को देखकर ऐसा मालूम पड़ता है कि तुम किसी चिन्ता में हो।

नटी- स्वामिन्! चिन्ता क्या? भगवान जम्भेश्वर के इस विशाल मन्दिर के प्रांगण में नाटक देखने की लालसा से आये हुए इस अपार जन समूह को देखकर समझ में नहीं आ रहा है कि अब क्या किया जाये।

सूत्रधार- प्रिये! इसमें चिंता की क्या बात है? मेरी राय में भगवान श्री जम्भेश्वर द्वारा चलाये गये श्री बिश्नोई धर्म सम्बन्धी कोई नाटक करके दिखाया जाये।

नटी- स्वामिन! यह तो ठीक है। परन्तु वर्तमान में श्री बिश्नोई समाज को देखकर हृदय में बड़ा खेद होता है।

सूत्रधार- प्रिये! खेद क्यों होता है? इसका कारण तो बताओ।

नटी- स्वामिन्! समाज की जब मैं पुरानी स्थिति से वर्तमान स्थिति का मिलान करती हुँ तब मेरा सिर शर्म से नीचे की ओर झुक जाता है। आखिर ऐसा क्यों है?

(तर्ज-राधेश्याम)

गुरुदेव ने कृपा करके,यह पावन पंथ चलाया था।
अहिंसा वृत्ति में बड़ा प्रेम, हिंसा का नाम मिटाया था।।
कहलाते थे धर्मवीर जो, क्यों धर्म छोड़ते जाते हैं।
ऊपर के चढ़ने वाले ये, अब क्यों नीचे को आते हैं।
धर्म छोड़ने से इनके, गुरुदेव ने दृष्टि हटाई है।।
जो संगठन से रहते थे, वहाँ पड़ी फूट की खाई है।

सूत्रधार- प्रिये! तुम्हारा कथन यथार्थ में सत्य है। परन्तु विचार करके यदि देखा जाये तो समय के मान से ऐसा होता ही है। धर्म घटता-बढ़ता रहता है। जब दानव स्वभाव के लोग बढ़ते हैं और वसुन्धरा उनके पापों के बोझ से पीड़ित हो जाती है, तब सर्व शक्तिमान परमात्मा अपने अंश से विविध रूप धारण कर अत्याचारियों का नाश कर भूमि का भार हटाते हैं।

(तर्ज-राधेश्याम)

जब हानि धर्म की होती है, अरु अत्याचार बढ़ जाते हैं।
तब विविध रूप से आकर प्रभु, भूमि का भार हटाते हैं।।

सूत्रधार- प्रिये! मेरी राय में आज वीरता से भरा जोशीला नाटक दिखाना है, जिससे लोग अपने पूर्वजों द्वारा किये गये कार्यों की स्मृति का स्मरण कर सकें।

नटी- अच्छा तो स्वामिन! इसके लिये आपने कोई उपाय सोचा ही होगा, कृपा कर बताईये, जिससे कि बिश्नोई धर्म का प्रचार हो

और उसमें पुनः वीरता जागृत हो। स्वामिन! ऐसा कौनसा जोशीला नाटक है? कृपा कर बतलाईये।

सूत्रधार- प्रिये! आज से ढ़ाई सौ वर्ष पूर्व भादव सुदी दशवीं मंगलवार संवत् 1787 को राजस्थान की प्रसिद्ध एवं पावन भूमि खेजड़ली ग्राम में जो घटना घटी थी और उसमें तीन सौ तिरेसठ वीर बिश्नोइयों ने हँसते-हँसते वृक्षों पर बलिदान होकर अपनी वीरता का परिचय दिया था, उन्हीं वीरों की याद दिलाना है। उन्होनें पर्यावरण की रक्षा का पाठ पढ़ाया था।

(तर्ज -राधेश्याम)

खेजड़ली ग्राम की घटना से, हे प्रिये इन्हें जगाना है।
कितना था पहले प्रेम-धर्म का, यह करके आज दिखाना है।।
मारवाड़ के ग्रामों में, बिश्नोई जहां पर बसते हैं।
वहाँ-वहाँ के वन्य प्राणी, सब निर्भय मान बिचरते हैं।।
प्राणी की तो कहे कौन, कई वृक्षों पर बलिदान हुये।
वृद्ध युवक नर नार सभी, बलि बालक तक बलिदान हुये।

नटी- स्वामिन! यह क्या कह रहे हो? पहले बिश्नोई समाज में इतना धर्म प्रेम था जो वृक्षों के लिये बलिदान हो गये। तब तो स्वामिन्! पुराने इतिहास को लेकर पुरानी ही वीरता का परिचय कराया जाये। स्वामी! अब विलम्ब का समय नहीं है। कारण कि नाटक देखने की लालसा से बैठी हुई जनता उकता सी जा रही है।

सूत्रधार- हाँ प्रिये! सत्य है। जाओ! तीसरी घंटी बजाकर नाटक का कार्य प्रारम्भ करो। पात्रों को ऐसा सजावो, जिसमें वास्तविकता की झलक दिख पड़े। प्रिये! आओ गाते चलें।

नटी- हां स्वामी! इन्हें जगाते चलें।

गायन

जाग जाग बिश्नोई भाई! अब तो जागो रे कि हो जा आगो रे।
पूर्व तपस्या थी जब तेरी, बिश्नोई तन पायो रे।।
भूल गयो अज्ञान पंथ में, विरथा जनम गमायो रे।
वीरों की संतान वीर हो, कायरता त्यागो रे।। होजा।।

छोड़ के अपने पावन पंथ को, इत-उत क्यों भटकावे रे।
कुल गौरव मर्यादा आचरण, क्यों भक्ति विसरावे रे।।
गुरुदेव है सहाय हमारे, पायें लागो रे। कि होजा आगो रे।
जाग जाग बिश्नोई भाई, अब तो जागो रे कि हो जा आगो रे।।

चौथा दृश्य

स्थान-श्री जाम्भोजी का मन्दिर

(मन्दिर में तीन महात्माओं का परस्पर वार्तालाप)

गोकुलजी- संतो! क्या बतावें? इस राजस्थान की पावन भूमि में इस खेजड़ली ग्राम के आसपास चौरासी गाँवों में श्री बिश्नोई समाज रहता है और भगवान जम्भेश्वर द्वारा चलाये गये पावन श्री बीस और नौ ऐसे उनतीस (धर्म) नियमों का यथा विधि पालन करते हैं। सदैव अपने कर्त्तव्यों (धर्म) पर मर मिटने के लिये तत्पर रहते हैं।

रासानन्दजी- महात्मन्! आपका कथन ठीक है। होना तो ऐसा ही चाहिये, परन्तु अधिकांश यह अनुभव किया जा रहा है कि कुछ लोग धर्म को त्यागकर पीछे हट रहे हैं। ऐसे लोग समाज एवं धर्म को अवनति की ओर ले जाकर बदनाम करते जा रहे हैं। यदि यही स्थिति बनी रही, तो उत्तम कर्म करने वाले अहिंसा वादी ये वीर बिश्नोई लोग पूर्ण हिंसक बन जावेंगे और निंदनीय कर्मों में लग जावेंगे।

हरिनन्दजी- महात्मन्! यदि ऐसी स्थिति है तो हम संतों का भी कर्त्तव्य हो जाता है कि हम लोग भी अपने उपदेश द्वारा उन्हें जागरूक करें।

गोकुलजी- संतों! आपका विचार उत्तम है इसके लिये कल अमावस्या का पवित्र दिन है ही। स्थानीय ग्राम के अतिरिक्त अन्य ग्रामों के लोग भी मन्दिर में सामूहिक हवन करने आयेंगे। हवन के पश्चात् इसके सम्बन्ध में उन्हें पूर्णतया समझा दिया जायेगा ताकि वे लोग धर्म से अपनी श्रद्धाएं न हटायें।

रासानन्दजी- महात्मन्! यह तो ठीक है कृपा कर ये बतायें कि उनतीस नियमों में से कल कौनसे नियम (धर्म) पर प्रकाश डाला जावे ताकि वैसी तैयारी की जा सके।

हरिनन्द जी- महात्मन्! गत अमावस्या को सोलहवें नियम अर्थात् दान के बारे में समझाया गया था। इसके आगे अब सत्रहवें नियम अर्थात् वृक्ष रक्षा पर प्रकाश डालना है, ताकि लोग धर्म की मर्यादा पालते हुए हरे वृक्षों को न काटें।

रासानन्दजी- आज चौदस का दिन है। ग्राम सेवक को बुलाकर इसकी सूचना उसके द्वारा ग्रामों में करा दी जावे।

गोकुलजी- बहुत अच्छा महोत्सव मनाया जाय। इसकी सूचना ग्राम सेवक को देकर बुला लाओ।

(हरिनन्दजी का जाना और ग्राम सेवक को बुलाकर लाना। ग्राम सेवक से कहना।)

गोकुलजी- ग्राम सेवक! जाओ खेजड़ली और आसपास के सब ग्रामों में सूचना दे आओ, ताकि लोग कल अमावस्या के दिन अधिक से अधिक संख्या में आकर सामूहिक हवन में सम्मिलित होवें।

(ग्राम सेवक का जाना और डौंडी (ढ़िंढ़ोरा) पीटते हुए कहना)

ग्राम सेवक- ग्राम के समस्त भाइयों! माताओं! बहनों! छोटे-बड़े सभी सुनो रे! कल अमावस्या का दिन है। खेजड़ली ग्राम के गुरु जाम्भोजी के मन्दिर में सामूहिक हवन होगा। रे भाईयो! संत महात्मागण धर्म पर उपदेश देंगे रे भाईयो। प्रात: ठीक समय पर पधारने की कृपा करना भाइयो।

पाँचवाँ दृश्य

स्थान - गुरु जम्भेश्वर मन्दिर

(महात्माओं एवं बिश्नोइयों का सामूहिक हवन करना एवं धर्म पर उपदेश देना)

रासानन्दजी- धर्म प्रेमी महात्मागण! श्री बिश्नोई भाइयो! माताओ! बहनो! अब सामूहिक हवन समाप्त हुआ। महात्मा गोकुलजी आपको उपदेश देंगे। ध्यान देकर सुनें।

गोकुलजी- समस्त भाइयो और बहनो! मैंने गत माह की अमावस्या को 16 वें धर्म (नियम) में सुपात्र जनों को दान देने के विषय में समझाया था। उसके आगे आज सत्रहवें नियम पर प्रकाश डालने का प्रयास करूँगा। सत्रहवें धर्म में परम आराध्य भगवान

जम्भेश्वर ने, पर्यावरण की रक्षा के लिये हरे वृक्ष काटने का निषेध किया है। कारण कि आप जानते है कि प्राणी को वृक्षों से शुद्ध वायु मिलती है। जिस पर प्राणियों का जीवन निर्भर है। वृक्षों से जड़ी-बूटी मिलती है। इनकी सूखी लकड़ी से मकान भी बनाये जाते हैं। भोजन की सामग्री भी इन्हीं से बनाई जाती है। वृक्ष बहुत ही उपयोगी हैं। मारवाड़ में वृक्षों का अभाव है। इसलिये वर्षा कम होती है और वह मरुस्थल कहलाता है। यहां कैर, बबूल, बेर, पीपल और विशेषकर खेजड़ी पायी जाती है। गुरुदेव ने खेजड़ी की रक्षा के लिये उसे तुलसी, पीपल और गाय के समान पूजनीय बताकर, उसकी रक्षा का संकेत दिया और स्वयं अपने कर कमलों से वृक्षारोपण करते रहे। रोटू गांव में बगीचा भी लगाया। यहाँ तक कि स्वयं ने जीवनभर कंकेहड़ी वृक्ष के नीचे निवास किया था। कहा है-''हरि कंकेड़ी मंडप मेड़ी जहाँ हमारा वासा'' वृक्षों की रक्षा के लिये लक्ष्मण रेखा खींच दी थी। कहा था-

''बार तीवार ध्यान धर उर, में हरे वृक्ष नहीं काटें।''

''जासे जीव जिये वसुधा के, वारि काट क्या वाटें।''

इसलिये आप सर्व धर्म प्रेमी भाइयों को चाहिये कि गुरुदेव की आज्ञानुसार अपने धर्म पालन में सदैव तत्पर रहें और वृक्षों की रक्षा करते रहें। अब संत हरिनन्द जी आपको सत्रहवें नियम पर कुछ समझायेंगे।

हरिनन्दजी- बैठे हुए आदरणीय सन्तो धर्म प्रेमी भाइयो, बहनो बच्चो और बच्चियो! अभी महात्मा गोकुलजी नें जीव एवं वृक्ष रक्षा के बारे में समझाया है। मैं भी अपनी अल्प बुद्धि अनुसार आपका थोड़ा समय लेकर समझाऊँगा। वृक्ष संहिता में लिखा है कि वनों की रक्षा के लिये ''हरित वृक्ष न हन्तव्यम्''

शेर

करे रूंख प्रति पाल खेजड़ा रखत रखावे।
जीव दया पालनी, रूंख लीला नहीं घावै।

हरा वृक्ष नहीं काटना, है गुरु का मन्तव्य।
रक्षा में तत्पर रहे, जान यही कर्त्तव्य।।

आप इसका पालन अवश्य करें। वृक्ष एवं वनों की रक्षा से आपका अहिंसा पर प्रेम बढ़ेगा। हिंसा की वृत्ति से बच जाओगे और अपने जीवन को शांतिमय बिता सकोगे। खेजड़ी मारवाड़ के वनों में मुख्य वृक्ष है। अन्य वृक्षों के साथ विशेषकर इसकी रक्षा करना अपना परम कर्त्तव्य है। आज आपको दिये गये उपदेशों से यह प्रण लेकर जाना चाहिये कि हम वृक्ष रक्षा के लिये अपने प्राणों की बलि दे देंगे, परन्तु वृक्ष नहीं कटने देंगे। आप एक-एक खड़े होकर अग्निदेव एवं भगवान श्री जम्भेश्वर के समक्ष अपना अपना प्रण करें। आज प्रण करने के बाद भगवान की आरती की जावेगी। बोलो-

भगवान जम्भेश्वर की.....जय।
बिश्नोई धर्म की.....जय।
अपने धर्म से विचलित.....नहीं होंगे, नहीं होंगे।
वृक्ष की रक्षा.....करेंगे, करेंगे।
खेजड़ी की रक्षा.....करेंगे, करेंगे।
वनों की रक्षा.....करेंगे, करेंगे।

अणदा- हे महात्मन्! आपके इन दिये गये उपदेशों से हमें चेतना हुई।आज मैं भगवान जम्भेश्वर एवं अग्निदेव की साक्षी लेकर आप सभी के समक्ष यह प्रण करता हूं।

शेर

गिरे छाती पर जो बिजली, देह में आग लग जाये।
गिरता पहाड़ हो पर, चाहे आँखें उबल जायें।।
पश्चिम में उगे सूर्य चाहे, अस्त पूर्व में हो जाये।
बलिदान होवे वृक्ष पर, नहीं धर्म से हट जायें।।

हे महात्मन्! हमारे चाहे प्राण चले जायें परन्तु हम वृक्षों एवं खेजड़ी को आँच तक नहीं आने देंगे।

किसना- हे महात्मन्! मैं अभी अग्निदेव की साक्षी लेकर प्रतिज्ञा करता हूं।

शेर

दिशाएँ भूलकर सूरज अंधेरे में छा जाये।

रसातल आकाश को चल दे, चन्द्रमा नीचे उतर आये।।
विमुख हो जाये चाहे शंकर, दशा कैलाश की बदले।
समुन्दर सूख जाये और गति आकाश की बदले।।
हर समय तैयार हैं हम, धर्म सेवा के लिये।
प्राण तक दे देंगे हम, वृक्ष रक्षा के लिये।।
खेजड़ी इस भूमि पर, हमेशा पूजी जायेगी।
चाहे हो बलिदान हम, नहीं आँच आने पाएगी।

अहा हे महात्मन्! हम वृक्षों की रक्षा के लिये सदा तैयार रहेंगे।

कान्हा- महात्मन् ध्यान देकर मेरी भी सुनिये।

शेर

सदा हृदय में जिनके, धर्म की मर्यादा बसती है।
उन्हें सत् से दे गिरा, भला यह किसकी शक्ति है।
वृक्ष रक्षा हित में हम, प्राण दे देंगे।
बलाओं की भी हो वर्षा, तो अपने सिर पर झेलेंगे।

हे महात्मन्! हम वृक्ष रक्षा के लिये सदैव तत्पर रहेंगे।

ऊदा- हे महात्मन्! वन रक्षा हेतु मैं भी प्रण करता हूँ।

शेर

चाहे ठोकरें खाते फिरें, दुस्तर पहाड़ों में।।
कहीं जंगल को कहीं पर्वत, कहीं पर बन उजाड़ों में।।
निराशाओं के बादल चाहे, घिर-घिर के छँट जाय।।
कहके बदलें हम नहीं, सिर धड़ से कट जाय।।
पूरी कसौटी होगी ये, आपके विश्वास की।।
वृक्ष रक्षा होगी तब, देह में है स्वांस की।।

हे महात्मन्! हर तरह से माँ खेजड़ी और वृक्षों की रक्षा होगी। आप निश्चिन्त रहें।

गोकुलजी- मेरे प्यारे श्री बिश्नोई वीरो! बहादुरो! सच्चे क्षत्रियो! तुम्हारे इन दिये गये विश्वास से मुझे पूरी आशा बंधी है। हे वीरो! भगवान जम्भेश्वर तुम्हारे द्वारा सदैव धर्म की रक्षा कराते रहें, यही हार्दिक कामना है। आरती के पश्चात् हम सब मिलकर वृक्ष पर गीत बोलेंगे।

(सामूहिक आरती करना)

वृक्ष रक्षा पर सामूहिक गीत

गीत

वृक्ष मत काटो रे भाई, वृक्षों की रक्षा कर भाई।
सत्रहवें नियम में गुरुदेव ने, है सबको समझाई।।

वृक्षों से लकड़ी मिलती है, सुन्दर भवन बनाते।
भोजन की सारी सामग्री, लकड़ी से पकवाते।।

जड़ी-बूटी मिलती है इनसे, बहती मिट्टी बचाई।
वृक्ष मत काटो रे भाई, वनों की रक्षा कर भाई।।

फल सब्जी देते हैं ये सब, वर्षा भी करवाते।
इनके ही फूलों के लिये हम, सुन्दर बाग लगाते।

शुद्ध वायु मिलती है इनसे, अरु आत्म शक्ति आई।
वृक्ष मत काटो रे भाई, वृक्षों की रक्षा कर भाई।।

वृक्ष के नीचे बैठ गुरुजी, इकावन वर्ष बिताए।
हरी कंकेड़ी मंडप मेड़ी, लोगों ने समझाए।।

रक्षा भार तुम्हें सौंपा, है करते हो जाई।
वृक्ष मत काटो रे भाई, वनों की रक्षा कर भाई।।

सत्रहवें नियम में गुरुदेव ने, सबको समझाई।।

भगवान जम्भेश्वर की.....जय।
बिश्नोई धर्म की.....जय।
अपने धर्म से विचलित.....नहीं होंगे, नहीं होंगे।
वृक्ष की रक्षा.....करेंगे, करेंगे।
खेजड़ी की रक्षा.....करेंगे, करेंगे।
वनों की रक्षा.....करेंगे, करेंगे।

छठा दृश्य

(अणदा का घर-दामा, चीमा, इमरती का आपस में वार्तालाप)

अणदा- प्यारी पत्नी कान्ही! बच्चियो! दामी चीमां इमरती कल अमावस्या को आप सबने वृक्ष रक्षा अर्थात् वन रक्षा विशेषकर गंगा, पीपल, तुलसी के समान मां खेजड़ी की रक्षा के बारे में उपदेश सुना था। उन उपदेशों का पालन अर्थात् भगवान जम्भेश्वर के चलाए पावन श्री बिश्नोई धर्म के नियमों का पालन करना

हमारा परम कर्त्तव्य है। हे देवी! बच्चियो! चाहे प्राण भले ही चले जायें, परन्तु धर्म से विचलित नहीं होवेंगे, फिर से विश्वास दिलाते हुए बोलो-

भगवान जम्भेश्वर की.....जय।
बिश्नोई धर्म की.....जय।
बोलो धर्म से विचलित.....नहीं होंगे, नहीं होंगे।
वृक्ष की रक्षा.....करेंगे, करेंगे।
खेजड़ी की रक्षा.....करेंगे, करेंगे।
वनों की रक्षा.....करेंगे, करेंगे।

इमरती- पिताजी! उन्हीं वीर बिश्नोई की बेटी हूं, जिनका धर्म पर अगाध प्रेम है। मैं आपको विश्वास दिलाती हूँ, धर्म पालन अर्थात् वृक्ष रक्षा खेजड़ी की रक्षा तत्परता से करूँगी। सुनिये-

शेर

हमें है अपने धर्म की, प्राणों से अधिक चिन्ता।
हमारे ध्यान में रहती है, सदा सत्कर्म की चिन्ता।
सब कुछ जानती हूँ, करूँगी क्या और क्या होगी।
होगी वही जो उत्तम, रक्षा धर्म की होगी।।
पिता श्री! इसके लिये आप निश्चिन्त रहें।

दामी- पिताजी! आप इसकी कोई चिन्ता न करें। मैं भगवान् जम्भेश्वर की साक्षी में प्रण करती हूँ कि मेरे पिताजी के आदर्श में जीते जी कमी नहीं आने दूँगी। और न मैं अपनी माँ के दूध को कभी लजाऊँगी। नियम पालन में अपने को बलिदान कर दूँगी, परन्तु विचलित नहीं होऊँगी, नहीं होऊँगी, नहीं होऊँगी।

शेर

शिक्षा मिलती है धर्म की, जीवन बिताने के लिये।
देह पायी है यह मानव, कर्त्तव्य निभाने के लिये।
जप तप ज्ञान दया, धर्म का पालन यही है।
स्वर्ग जाने के लिये भी, मार्ग यही है।

चीमां- बहन दामी के प्रण में मेरा भी प्रण है।
लुट जाय धन धाम सारा, खो जाय मान भी।
जगत जो रूठ भी जाए, चाहे सुने भगवान भी।

शहनाईयां बजती रहें, जिस भूमि पर अति हर्ष की।
वृक्ष पर बलिदान होवें, संतान भारत वर्ष की।।

सातवाँ दृश्य

अभयसिंह राजा का महल

(राजा सिंहासन पर बैठे हैं। दो दूतों का आकर प्रमाण करना और आकर खड़े-खड़े ही कहना)

दूत 1 - महाराजाधिराज श्री जोधपुर नरेश के जीवन की जय हो।

दूत 2 - महाराजाधिराजजी श्री जोधपुर नरेश के जीवन की जय हो।

नरेश अभयसिंह - आयुष्मान हो दूतवरो, आयुष्मान हो। कहो सेवको! इस समय प्रजा का क्या हाल है? सारी प्रजा कुशल पूर्वक तो है? मेरे द्वारा किसी को कष्ट तो नहीं हो रहा है? गऊ, ब्राह्मण, सन्त और गरीब तो नहीं सताए जा रहे हैं? राज में चोरी लूट और अन्याय तो नहीं हो रहा है? बड़ों का कोई अनादर तो नहीं करते हैं?

शेर

राजा है तो क्या हुआ, प्रजा का सेवक है।
प्रजा समझ हमें ऐसे, हि हम उनके देवक हैं।।
प्रजा दु:ख ओं दु:ख में रहे, तो उस राज को धिक्कार है।
सुख में प्रजा हो जिससे, वही मुझे स्वीकार है।।
धर्म स्वतंत्रता है प्रजा में, हर तरह से होगी।
दीन हो चाहे धनपति, चाहे संत हो योगी।।

हे सेवको! प्रजा में हर तरह से सुख शान्ति बनी रहे, यही भगवान से सदा प्रार्थना करता रहता हूँ।

शेर

दूत 1 - धन्य है राजन् आपका, इस तरह का बोलना।
क्षत्रीय वंश की कीर्ति, को कौंटों में धर तोलना।।
क्यों न हो इस वंश में, धर्म नीति के नरेश।
जिसका यश संसार में, सब जगह छाये संदेश।।

वार्ता - अहा हे राजन्! आपके राज्य में प्रजा सब तरह से सुखी है, धर्म नीति पर चलने आपके ही गुणानुवाद गाया करती है।

दूत-2 - महाराज! महाराज!

नरेश- दूतवर तुम क्या कहना चाहते हो कहो, कहो निडर होकर कहो।

दूत 2 – अहा हे राजन्!

शेर

धर्म नीति आपकी से, नहीं कोई क्लान्त है।
सुखी है सारी प्रजा, और सब तरह से शान्त है।।
सत ज्ञान विद्या धर्म का, पालन सदा करते हैं वे।
परस्पर प्रेम है सब में, दु:ख सदा हरते हैं वे।।
धर्म नीति आपकी से, कोई नहीं कहीं क्रान्ति है।
आपके इस राज्य में सब ही तरह से शान्ति है।।

नरेश– सेवको! यही मैं भी चाहता हूँ, क्योंकि प्रजा के लिये मैं भी हमेशा तैयार रहता हूँ। सुनो–

शेर

प्रजा हित से हम हटते नहीं, मस्तक कटाने से।
हिचकते हैं नहीं प्रजा हित में, सम्पत्ति लुटाने से।।
बढ़ेगा मान राजा का, प्रजा के बढ़ाने से।
बने हैं हम आज राजा, प्रजा ही के बनाने से।।
मेरी सुख सम्पत्ति भी, प्रजा की ही दया से है।
प्रजा है जबकि राजा से तो, राजा भी प्रजा से है।।

दूतवरो! जाओ राज्य के महामन्त्री श्री गिरधरदास जी को यहाँ महल में बुला लाओ।

दूत 1 व 2– जो आज्ञा महाराज! दूत आपकी आज्ञा पाकर अभी जा रहे हैं।

(दूतों का जाना और गिरधरदास को बुलाकर लाना)

दूत 1 – महाराजाधिराज श्री जोधपुर नरेशजी के जीवन की जय हो।

दूत 2 – महाराजाधिराज श्री जोधपुर नरेशजी के जीवन की जय हो।

नरेश– सेवको! कहो क्या समाचार है?

दूत 1 – अहा हे राजन्! राजदरबार में महामंत्री जी पधार रहे हैं।

दूत 2 – महाराज! सेवकों को क्या आज्ञा है, कृपा कर बताईये।

नरेश – अच्छा तो उन्हें आने दो।

दूत 1 – महामंत्रीजी कृपा कर राजदरबार में पधारिये।

श्री गिरधरदास– महाराजाधिराज श्री जोधपुर नरेश जी के जीवन की जय हो।

नरेश– आयुष्मान हो महामंत्रीजी! आयुष्मान हो! बैठिये।

गिरधरदास– हे राजन्! मंत्री को किस हेतु राजदरबार में बुलवाया है, कृपाकर

बताइये–आप द्वारा पदस्थ मंत्री हर तरह से आपकी आज्ञा पालने को तैयार है।

नरेश– महामंत्रीजी मुझे सदैव ही अपनी प्रजा एवं राज्य व्यवस्था की चिन्ता बनी रहती है। मुझे चाहे जितना भी कष्ट क्यों न होवे, परन्तु मेरे रहते हुए मेरी प्यारी प्रजा को किसी प्रकार का कष्ट नहीं होना चाहिये।

महामंत्री– राजन्! आपके शासनकाल में प्रजा सुख और शांति से रहती है। इस समय आपके राज्य में किसी भी प्रकार की अशांति नहीं है।

शेर

उमर आराम से, प्रजा की बसर होती है।
दीन दु:खियों की, बड़े सुख से गुजर होती है।।
काम शुभ होते हैं सब, और कोई बदकाम नहीं।
है आपके इस राज्य में, अशुभ का कोई नाम नहीं।।

नरेश– महामंत्रीजी! तब तो बहुत ही अच्छा है और यही मैं भी चाहता हूँ। परन्तु यह तो बताओ, अपने राज्य में बनाए जाने वाले बिछियागढ़ के किले का क्या हाल है? अभी तक किले का कार्य पूर्ण हुआ या नहीं? किले के निर्माण–कार्य में कोई कमी तो नहीं है।

महामंत्री– क्या बताऊँ, राजन्! आपके द्वारा निर्माण किये जाने वाले बिछियागढ़ के किले का कार्य अभी अधूरा है। आपकी धर्म नीति पर चलने के कारण जन–सेवा में आय से अधिक व्यय किया जा रहा है। यदि इसी प्रकार व्यय भार बढ़ता रहा तो राज्य के कार्य का चलना कठिन हो जायेगा और आपका बनाये जाने वाला किला कभी नहीं बन पायेगा।

नरेश– महामंत्री जी! इसके लिये आप अपना सुझाव दीजिये कि राज्य के कार्य को सुचारू रूप से चलाने के लिये आय–व्यय की किस तरह व्यवस्था की जाये और किले का कार्य भी पूर्ण हो सके।

महामंत्री– महाराज! वैसे यदि प्रजा का ध्यान रखा जाये और यदि कर बढ़ा देंगे, तो प्रजा में असन्तोष बढ़ेगा। किले के लिये केवल चूने की विशेष आवश्यकता है। जो भट्टियाँ लगाकर तैयार किया जा सकता है।

नरेश– तो महामंत्रीजी! भट्टियाँ किस प्रकार लगाई जायेंगी। यदि भट्टियाँ लगाई गई तो उसमें तो विशेष लकड़ियों की आवश्यकता होगी, फिर इतनी लकड़ियां कहां से प्राप्त होगी। इस पर भी विचार कर लेवें।

महामंत्री– राजन्! इसके लिये अपने ही राज्य में जोधपुर से 16 मील की दूरी पर खेजड़ली नामक ग्राम है वहां और उसके आसपास के 84 ग्रामों में खेजड़ी के वृक्ष अधिक लगे है। शासन द्वारा उन्हें कटवाकर कोयला तैयार किया जावे और फिर उससे चूने को पकाकर शीघ्र ही किले का कार्य पूर्ण किया जा सकता है।

नरेश– महामंत्रीजी! यह आपका विचार बहुत ही उत्तम है, परन्तु यह तो बतावें वृक्षों के कटवानें में प्रजा की ओर से कोई रोक–टोक तो नहीं होगी कारण कि वर्षो से लगे खेजड़ी वृक्षों से उनका निर्वाह होता होगा और ये बताओ वहां किस जाति के लोग निवास करते है।

महामंत्री– महाराज! वहां अधिकांश विश्नोई जाति के लोग रहते है जो हष्ट–पुष्ट और बड़े शूरवीर कहलाते है।

नरेश– जब वे वीर कहाते है और यदि खेजड़ी काटने से उन्होनें रोका तो फिर क्या किया जायेगा। इसका उपाय भी खेजड़ी काटना आरम्भ करने से पहले ही सोच लिया जावे।

महामंत्री– राजन्! वे करेंगे क्या? राजा एवं शासन के समक्ष उनका प्रभाव ही क्या रहेगा शासन जैसा चाहेगा उनको वैसा ही करना पड़ेगा, फिर वृक्षों पर तो उनका अधिकार ही क्या है।

नरेश– अच्छा तो जाओ और कुछ सैनिकों को साथ ले जाओ वहां के सभी ग्रामों के वृक्ष का मूल्यांकन कर बाद में खेजड़ली ग्राम में देखना कि कितने वृक्ष है जिससे भट्टी लगाकर कितना कोयला तैयार किया जा सकता है। कुछ वृक्षों को कटवाकर भी देखना और परिस्थिति का भली भांति अध्ययन भी करना कि वृक्षों के काटने में कोई रूकावट तो नहीं आती है।

महामंत्री– राजन् आपकी आज्ञा पाकर अवश्य ही जाता हूं। कुछ सैनिक भी मेरे साथ रहेंगे।

नरेश– महामंत्रीजी! आप राज्य के महामंत्री जी है। आपको विशेषकर

समझाने की आवश्यकता नहीं है। जरा विवेक से ही काम लेना–जिससे सांप मरे लाठी न टूटे। इधर प्रजा को किसी प्रकार का कष्ट भी न हो और अपना कार्य भी बन सके।

महामंत्री– हां राजन्! विवेक से ही काम लूंगा। तो फिर जाने की तैयारी करता हूं।

नरेश– बहुत अच्छा! जाते तो हो, परन्तु पुनः सचेत कर देता हूँ कि आप राज्य की प्रतिष्ठा को सदैव ध्यान में रखकर कार्य करना।

आठवाँ दृश्य

खेजड़ी का बगीचा

(खेजड़ली के बगीचे में लड़कियाँ 1 दामी, 2 चीमा, 3 इमरती और 4 गौरां का सामूहिक गाना। झूले पर बैठकर गाना एवं वार्तालाप)

दामी – बहन चीमा! कल पूज्य पिताजी ने अपने बिश्नोई धर्म के सत्रहवें नियम पालने के बारे में बताया था–वह नियम तुझे स्मरण है कि तूँ भूल गई। बहन इमरती तुझे तो याद होगा ही।

चीमा– बहन दामी तूँ यह क्या कह रही है? भला मैं यह कैसे भूल सकती हूँ?

दामी– अच्छा, तुझे याद है तो बता वह नियम कौनसा है।

चीमा– अरी पगली! तुझे विश्वास ही नहीं है, तो सुन।

शेर

बार तिवार ध्यान धर उर में, हरे वृक्ष नहीं काटें।
जासे जीव जीवे वसुधा पे, वाहि काटें क्या बाँटे।

अर्थ

हे बहन! सत्रहवें नियम में वृक्षों की रक्षा करना, माँ खेजड़ी की रक्षा करना बताया था और पिताश्री अणदा, माता कान्हा और किसना, ऊदा, माताजी बहन कर्मा और गौरां आदि ने वृक्ष रक्षा हेतु प्रतिज्ञाएँ भी की थी।

दामी– क्या प्रतिज्ञाएँ की थी? जरा दोहरावोगी और यदि कोई डरा–धमका कर वृक्षों को काटने लगे तो ऐसी स्थिति में तुम क्या करोगी? साहस रखोगी या डर जाओगी।

चीमा– बहन दामी! यह क्या कह रही हो? डरोगी या साहस रखोगी– हम क्षत्रिय वीर बिश्नोइयों की लड़कियाँ धर्म से विचलित हो जाएँ, कहीं डर जाएँ यह हो नहीं सकता, असम्भव, सदा असम्भव। सुनो–

शेर

यह कलेजा वह नहीं है, डर जाय जो तलवार से।
गूंजा देगी आसमान को, धर्म की जयकार से।।
एक दिन मरना है सबको, मौत की चिन्ता है क्या।
धर्म जो रह जाए तो फिर, जान की परवाह क्या।।
धर्म ही जीवन हमारा, धर्म ही वह राम है।
धर्म पर मरना हमारा, धर्म चारों धाम है।।
वृक्ष रक्षा से सदा हम, गीत गाती जायेंगी।
सेवा में तत्पर रहेगी, आंच न आने पायेगी।।

दामी- बहन चीमा! तुम्हें धन्य है, बस यही याद रखना है। अच्छा तो चलो हम लोग खेजड़ली ग्राम के बाहर उस खेजड़ी के बगीचे में गायें चरा लावें। इमरती तुझे भी याद है या नहीं।

चीमा- अच्छा तो बहन चलो, चलें। इस खेजड़ी वृक्ष की डाली पर बंधे झूले पर बैठकर खेजड़ी मां के गीत गावें और गायों को इधर चरने देवें।

दामी- बहन वर्षा ऋतु के दिन है और यह भादवा का महीना है। आकाश में तरह-तरह के बादल छाये हैं। खेजड़ी के सघन वृक्षों पर मोर बोल रहे है बहन कितना सुहावना लग रहा है।

इमरती- री बहनों वह मुझे भी याद है सुनो!

शेर

करे रूंख प्रतिपाल, खेजड़ा रखत रखावे।
जीव दया पालनी, रूंख लीला नहीं घावे।।
हरा वृक्ष नहीं काटना, गुरु का यह मन्तव्य।
रक्षा में तत्पर रहे, जान यही कर्तव्य।।
बहन! मैं भी गुरु उपदेशों को मानते हुए धर्म रक्षा के लिये तैयार रहूंगी और क्या करूंगी? सुनो-

शेर

हमारी वीरता की शक्ति है, विख्यात जग भर में।
धर्म रक्षा हेतु हम दें, प्राण पल भर में।।
करें हम वृक्ष की रक्षा, यही इक ध्यान मेरा है।
नहीं कुछ और मैं चाहूँ, साक्षी भगवान् मेरा है।।

भरा है प्रेम वृक्षों में, सदा उद्यान मेरा है।
दे दें जान बदले में, इसी में कल्याण मेरा है।।
बहन! वृक्ष रक्षा के लिये मैं सदा तैयार रहूँगी।

(तर्ज-राधेश्याम)

हे बहन! देखो देखो, इस बाग में मोर यों बोलते हैं।
निर्भय होकर ये प्राणी, इधर-उधर को डोलते हैं।।
इन्हें देख दु:ख भगता, जब कोयल कंठ सुर खोलती है।
वृक्षों से ऐसा लगता है, जैसे खेजड़ी माँ बोलती है।।

गायन

(तीनों मिलकर)

बदरा न घेरी माई। नंदनंदन बिलमाई।
बदरा न घेरी माई।
इत घन गरजे उत घन गरजे, पवन चले पुरवाई।
दादुर मोर पपीहा बोले, कोयल शब्द चले सुनाई।टेर
उमड़-घुमड़ चहुँ दिशी से आये, भादों गीत सुहाई।
मीरां के प्रभु गिरधर नागर, चरण कमल चितलाई।टेर

दामी- वर्षा ऋतु का गीत तो गा चुके, परन्तु माँ खेजड़ी का गीत तो गाया नहीं, उसे भी गाएँ।

चीमा- अच्छा तो शुरू करें।

गायन

(तीनों का मिलकर गाना)

म्हे तो खोजड़ी की शान बढ़ावाँ डटके।
खोजड़ी माता में, म्हारो मन अटके।।
खेजड़ी की पूजा करसाँ, खेजड़ी गुण गावां।
खेजड़ी की रक्षा कारण, हंस-हंस के मर जावां।।
खोजड़ी के हित में चाहबां सूली लटके।
खोजड़ी माता में, म्हारो मन अटके।।
रूखी-सूखी रोटी खावां, ठंडो पाणी पीवाँ।
धर्म अपनो कभी न छोड़ां, धर्म हेतु ही जीवाँ।।
गुरुदेव के गीत गावांला रटके।
खोजड़ी माता में म्हारो मन अटके।।

नौवाँ दृश्य

(गिरधर दास का खेजड़ली ग्राम के बाहर जाकर बगीचे के पास ही डेरा डालना)

गिरधरदास- सेवको! जरा उधर तो देखो यह हल्ला कैसे हो रहा है? आवाज से ऐसा प्रतीत होता है, मानों कोई गीत गा रहे हैं। जाओ, एकदम जाओ-उनका नाम, ग्राम और जाति आदि पूछकर तो आओ कि वे कौन लोग है।

दूत 1 - हां मंत्रीजी, ऐसा तो मुझे भी लगता है कि कोई वीरता के गीत गा रहे है।

गिरधरदास- वीरता के गीत गा रहे है, वीरता के गीत गा रहे है यही कहते ही रहोगे या फिर जाकर देखोगे।

(दूतों का जाकर देखना और पूछना)

दूत 1 - अरी! हे बालिकाओं- बताओ तुम कौन हो? तुम्हारा नाम क्या है? तुम कहां रहती हो?

दूत 2 - साथ-साथ यही भी बताओ तुम्हारी जाति क्या है? तुम ये जोशील गीत किसके गा रही हो?

दामी- हे भाई! मेरा नाम दामी है। मेरी इन छोटी बहनों का नाम इमरती और चीमा है। हमारी जाति विश्नोई है। हम इस बगीचे के पास ही के ग्राम खेजड़ली के निवासी है।

चीमा- हम हमारी पूजनीया मां खेजड़ी के गीत गा रही हैं। भाई! हम इस खेजड़ी मां को पवित्र तुलसी, गाय, गंगा और पीपल से भी अधिक मानकर पूजते है। और वृक्षों की रक्षा के लिये हमेशा तैयार रहते हैं।

दामी- हे भाई! परम गुरु भगवान जम्भेश्वर ने अपार कृपा करके इस खेजड़ी वृक्ष को अधिक महत्त्व दिया है। कारण है कि इस वृख के पत्ते से पशुपालन, फल से सब्जी और अन्य प्रकार से उपयोगी है। इनकी सुरक्षा का भार हम विश्नोइयों को सौंपा है। हम इनकी सुरक्षा के लिये सदा तैयार रहते है।

चीमा- हे भाई! देखो तो इन वृक्षों से यह देश कितना सुहावना लगता है। हम दिन भर इन्हीं वृक्षों के आस-पास अपनी गायें चराती रहती है और मां खेजड़ी के गीत गाया करती है।

दामी- हे भाई! न तो हम इन्हें काटते है और न किसी को काटने ही देते है। इन वृक्षों की ओर अपनी निगाह करके देखो तो सही, सैंकड़ों वर्षो से ये वृक्ष ध्रुव तारे की तरह अचल खड़े है। यहां तो सब ठीक है परन्तु यह तो बताइये आप कौन महानुभाव है, आप कहां रहते है, किस कार्य से कहां जा रहे हैं या यहां आये हैं? आप भी तो अपना नाम व पता बताते हुए पूर्ण परिचय देवें।

दूत 1 - हम जोधपुर नरेश महाराजा अभयसिंह जी के महामंत्री श्री गिरधरदास जी के दूत हैं, सैनिक भी हैं-हम महामंत्री जी के साथ यहां आये हैं।

चीमा- अच्छा तो कृपा कर बताइये महामंत्रीजी कहां पर है।

दूत 2 - वह देखो, वे उस खेजड़ी वृक्ष के नीचे अपना डेरा डाले विराजमान हैं।

दामी- अच्छा तो हमारे योग्य कोई सेवा हो तो उन्हें यहां बुला लावें।

दूत 1 - बच्चियो! तुम यहीं खड़ी रहना हम जाकर तुम्हारे बारे में महामंत्रीजी को सूचना दे देते हैं।

दूत 2 - बच्चियों! तुम यहाँ से कहीं मत जाना। हम जाकर तुम्हारे सम्बन्ध में महामंत्रीजी को सब हाल बता ही देंगे। यदि वे उचित समझकर यहाँ आना चाहेंगे, तो आ ही जायेंगे।

दूत 1 - बच्चियो! अब आने न आने का विचार छोड़ दो। यह निश्चित मानकर चलो कि आ ही जायेंगे।

(दोनों दूतों का आपस में वार्तालाप)

दूत 1 - भाई उनके गाने में कितना जोश था और वे किस तरह वीरता पूर्ण बातें कर रही थी?

दूत 2 - भाई मामला बड़ा टेढ़ा दिखाई देता है। तुम तो जोश की कह रहे हो, यहां तक कि वे खेजड़ी वृक्ष की रक्षा के लिये मरने को तैयार हो सकती हैं।

दूत 1 - भाई, तुम्हारा कहा यथार्थ में सत्य है। मैंने अपनी उम्र में पहली बार इतनी कम उम्र में बच्चियों को आज ही देख रहा हूँ। उनकी बातें सुनकर मैं तो अवाक् ही रह गया। अब वृक्षों को काटने की चर्चा करना, टेढ़ी खीर ही समझना। चलो-चलो-

(दोनों का महामंत्री के पास जाकर कहना)

दूत 1 व 2 - महामंत्रीजी के जीवन की जय हो।

महामंत्री- आयुष्मान् हो! सैनिको आयुष्मान् हो। कहो, क्या समाचार लाये हो? बताओ वे गाने वाली कौन थी और वे किसके जोशीले गीत गा रही थी।

दूत 1 - अहा हे महामंत्रीजी! क्या बतावें? यहाँ आने का अपना उद्देश्य प्राय: पूर्ण होने को है। आपको क्या बतावें? कुछ कहा नहीं जाता है।

महामंत्री- बताओ तो सही, आखिर क्या बात है? बोलने में इतना क्यों हिचकते हो?

दूत 1 - महामंत्रीजी! वे इसी समीप के ग्राम खेजड़ली के बसने वाले वीर बिश्नोइयों की दामी चीमा और इमरती नाम की तीन बालिकाएं थी। जो खेजड़ी वृक्ष से बंधे झूले पर झूलती हुई, खेजड़ी वृक्ष रक्षा के गीत गा रही थी।

महामंत्रीजी- सैनिको! जब ऐसी बात है, शीघ्र ही हमें उनके पास ले चलो। हम स्वयं भी तो देखें कि वे क्या कहती है? वहाँ पहुँचने से पहले तुम जाकर उन्हें कह दो कि महामंत्रीजी पधार रहे हैं।

(सेवकों का जाकर बच्चियों को सूचना देना)

दूत 1 - हे बच्चियो! वे देखो, हमारे महामंत्रीजी तुम्हारी ही ओर आ रहे हैं। वे जोधपुर राज्य के महामंत्री हैं। जरा सम्भलकर ही उनसे बात करना।

दूत 2 - सुनो बच्चियो! बातचीत के दौरान में कहीं ऐसा न हो कि तुम्हें उल्टे मुँह की खानी पड़े।

चीमा - सैनिको! हमें तुम्हारी ओर से ऐसी सलाह लेने की आवश्यकता नहीं है।

दामी - सैनिको! किसको क्या उत्तर देना हमने बचपन से सीख रखा है। तुम अपनी इस तरह की सलाह को अपने पास ही रहने दो। जरा उन्हें आने तो दो, हम उनसे जो बातचीत करेंगी और क्या-क्या उत्तर देंगी-बस उसको आप आंखों से देखना और कानों से सुनना।

(महामंत्रीजी का आना और बातचीत करना)

महामंत्री- अरी हे बच्चियो! यह तो बताओ कि तुम इस तरह के जोशीले गीत किसके गा रही हो?

चीमा- अरे! यह भी कोई बताने की आवश्यकता है कि हम किसके गीत गा रही है? जरा इधर-उधर ध्यान देकर सावधानी से सुनिये-तुलसी, पीपल, गाय और गंगा के समान पवित्र माँ खेजड़ी के गीत गा रही हैं।

महामंत्री- अरी हे नादान बच्चियो अब तुम खेजड़ी के गीत गाना छोड़ो- पहले यह बताओ कि यदि कोई तुम्हारी पवित्र माँ के समान खेजड़ी को काटना चाहे तो तुम क्या करोगी?

दामी- क्या कहा? क्या करोगी? कहने में जो भूल हो गई है। आपके मुँह से पूजन करने के स्थान पर जो खेजड़ी काटना शब्द निकल गया है-इस भूल को आप तत्काल सुधार लीजिये। इसके पश्चात् बातचीत करिये।

दूत 1 - महामन्त्री! बच्चियाँ कुछ भूल सुधारने को कह रही है ठीक तो है। भूल सुधारने में क्या हर्ज है।

दूत 2 - महामंत्रीजी! सैनिक ठीक ही कह रहा है। मनुष्य द्वारा भूल हो ही जाती है। दिन का भूला-भटका यदि रात्रि में चेत जाता है, तो भूला नहीं कहाता। मेरी राय में भूल सुधारना ही उत्तम है।

महामंत्री- अरे नालायको ये क्या बक रहे हो। इन्हें अभी तक मेरी महानता की पहचान नहीं है-अरे नन्ही मुन्नी बच्चियो! तुम मुझे अभी तक समझ नहीं पायी हो कि मैं कौन हूँ?

शेर

जोधपुर नरेश का, सरदार हूँ मैं।
इस राज्य की प्रजा का दातार हूँ मैं।
बढ़ते हुए राज्य का, विस्तार रोक दूँ।
प्रजा की चाहूँ तो, रफ्तार रोक दूँ।
किला बनाना राज्य में, इन वृक्षों को काटकर।
नादान बच्चियो समझलो, कहता हूँ डाँटकर।।
परवाह है क्या इसकी हमें, जो राज्य में हजार हैं।
बिश्नोई बेचारे कहाँ लगे, जो गिनती के दो चार हैं।।

अरे हे बच्चियो! जरा सम्भलकर बोलो।

चीमा- अरे हम संभलकर नहीं बोल रही हैं, तो क्या नींद में ही बोल रही हैं। हमारे जीते जी आपने ये वृक्ष काटने की बात कैसे कह डाली-दु:ख! हार्दिक दु:ख!

शेर

दिमाग में न आपके, है ज्ञान का परदा।
बुद्धि पर है पड़ गया, अज्ञान का परदा।।
छोटी न समझो, भूलकर विकट रास्ते पे चलते हैं।
बिश्नोई वीर की संतान को, सीधी समझते हैं।।

महामंत्रीजी! कहीं भूल से हमें केवल छोटी ही मत समझ बैठना और वृक्ष काटने का नाम अब भूल ही जाना! दोहराना छोड़ ही देना।

दामी- बहन चीमा हमारे रहते इन्होंने काटने का नाम कैसे ले डाला- अरे वृक्ष काटने का विचार करने वालो! जरा विचार कर बोलो।

शेर

कल्प वृक्ष है खेजड़ी, यह ध्रुव तारा है।
अमराचल का है ये पानी, गंगा की धारा है।।
न्योता न दे तू मौत को, अपनी आन पर।
काटने का नाम मत ले तूँ, अपनी जबान पर।।

अर्थ

महामंत्रीजी! ध्यान लगाकर सुनो। वृक्ष काटना शब्द अब अपनी जुबान से दुबारा मत निकालना।

महामंत्री- अरी हे नादान बच्चियो! जरा जुबान से सम्भलकर बोलो। अपनी बातों से हमें डराने का प्रयत्न न करो- हो चुकी, बस बहुत हो चुकी। इन जोशीली बातों का क्या परिणाम होगा? कान लगाकर सुनो-

शेर

न छोडूँगा इस तरह, एक वृक्ष भी बाकी।
कटेंगे वृक्ष ये सारे, न बचेगी डाल भी बाकी।।
बनेगा कोयला इनका, किला राज्य का बन जायेगा।
इसी से प्रजा का हित होगा, सब काम ही बन जायेगा।।

अर्थ-

अरी हे बच्चियो! देख क्या रही हो? तुम अपने को वीर बिश्नोइयों की संतान बता रही हो-खेजड़ी रक्षा के बारे में बार-बार बक-बक कर रही हो। ये देखो तुम्हारे देखते-देखते इन वृक्षों पर कुल्हाड़ी से प्रहार कर रहे हैं। इस पर तुम क्या कर सकती हो यही तो देखना चाहते हैं।

इमरती- अरे दुष्टो! यह क्या कर रहे हो?

शेर

इन वृक्षों के लिये क्यों, इतना जुल्म करते हो।
कटाकर क्यों तुम इनको, पाप का भण्डार भरते हो।।
मत डूब तूँ अज्ञान में, ज्ञान पहचान कर।
देख अपने हाथ से मत, मौत का सामना कर।।

महामंत्री- अरी हे बच्चियो! तुम्हारी ये वीरता एक ताक में रह जावेगी। छोटे मुँह बड़ी बात न करो-हमें इन वृक्षों को सहर्ष काटने दो बीच में रोड़ा न बनो।

चीमा- अरे ओ अन्यायी! ये क्या कह रहे हो? वृक्ष काटने दो, हमारे रहते हम हमारी प्यारी माँ समान इस खेजड़ी को काटने दें। यह कभी नहीं हो सकता सर्वथा असम्भव! असम्भव! अरे पापियो! ऐसा कहते तुम्हारी जीभ क्यों नहीं गल जाती? तुम्हारे मुंह में कीड़े क्यों नहीं पड़ जाते? हे भगवान जम्भेश्वर! हम हमारे जीते जी इन कानों से ये क्या सुन रही हैं-खेजड़ी काटने दो। अरे अधर्मी इधर देख अभी भी तेरे लिये सम्भल कर बोलने का मौका है।

शेर

जब नहीं है विष हर तो, तूं सांप को छूता है क्यों।
इस तरह अरमान के, बीज को बोता है क्यों।।
धर्म की आन है तब तक, कर्म का ध्यान जब तक है।
खेजड़ी कट नहीं सकती, तन में जान तब तक है।।

महामंत्री- अरी हे बच्चियो! सावधान होकर बोलो।

शेर

क्रोध को मेरे समझकर, खेलती हो खेल तुम।
बोलकर उल्टे वचन, अग्नि में डालो तेल तुम।।

देखते रहते तुम्हारे, ये वृक्ष न रह पायेंगे।
कौन है रक्षक तुम्हारे, जो बचाने आयेंगे।।

अमृता- अरे! अरे! यह क्या कह रहे हो?

शेर

कह जो डाला आपने, नहीं जिह्वा संभाली है।
वीर संतान को समझता, भोली-भाली है।।
क्या हमारी शक्ति को, छोटी बताता है हमें।
इन फौलाद के टुकड़ों को, मिट्टी बताता है हमें।।

महामंत्री- बस! सावधान।

शेर

हुआ है किसका ये साहस, इस पत्थर से टकराकर।
पड़ा है कौन मृत्यु के, भंवर में सामने आकर।।
अभी तक क्या संसार में, ऐसा योद्धा है।
जिसने राज्य के आदेश को, क्या कभी भी रोका है।।
सैनिको! उधर क्या देख रहे हो?

(कहते ही वृक्षों से बच्चियों का चिपक जाना)

कुल्हाड़ियों से खेजड़ी वृक्षों पर अपना प्रहार करो।

महामंत्री- हे बच्चियो! वृक्षों से तुम क्यों चिपक रही हो? एकदम वृक्षों से हटकर दूर हो जाओ-अकारण अपनी मौत को न्योता मत दो।

चीमा- खेजड़ी! ओ प्यारी माँ खेजड़ी! अब तूँ ही हमारी रक्षा कर। हमारे प्राण रहते हम तुझे कभी नहीं कटने देंगे। हे अधर्मियो! पहले तुम हम पर कुल्हाड़ी चलाओ, फिर माँ खेजड़ी पर।

दामी- हे माँ खेजड़ी! क्या करूं?

शेर

हे माँ खोजड़ी तेरे लिये, भक्ति तुम्हारी है।
हम हैं तेरी बालिका, तूँ माता हमारी है।।
हम न भूलेंगी तुझे, तूँ भूलना मत काम को।
हम रहेंगी माँ जहाँ कहीं, चमकायेंगे तब नाम को।।

हे माँ! हम तेरे पर अपने प्राण न्योछावर कर देंगी, परन्तु तुझे आँच नहीं आने देंगे।

(हटाना-पुनः चिपक जाना)

महामंत्री- सैनिकों! इन्हें धक्का देकर दूर करो और वृक्ष काटना प्रारम्भ करो।

(सैनिकों का झटका देकर दूर करना)

चीमां- अरी माँ! दौड़! दौड़! अरे ग्रामवासियों! तुम भी दौड़ो, अरे जरा आकर तो देखो, पापियों ने ग्राम के बाहर बगीचे में खेजड़ी वृक्षों पर अपना प्रहार करना शुरू कर दिया है। अरे विचारने और ढ़िलाई करने का समय नहीं है। जो जहाँ खड़े हो एकदम दौड़ पड़ो- दौड़ो-दौड़ो धर्म की लाज जा रही है- बचाओ-बचाओ।

दामी- अरे भाइयो! आओ! यदि खेजड़ी कट गई तो फिर हमारे जीने को धिक्कार है, धिक्कार है।

(ग्रामवासियों का एक साथ जोरों से आवाज करना-आ रहे हैं, आ रहे हैं। दुश्मनों का सामना करने आ रहे हैं।)

महामंत्री- सैनिको! यह जोर की आवाज एकाएक कहाँ से आ रही है। ऐसा लगता है मानो कहीं बादल गरज रहे हों।

सैनिक 1 - महामंत्री! जी मुझे भी ऐसा लग रहा है। परन्तु यह बादल गरजने की आवाज नहीं है। आ रहे हैं, आ रहे हैं। ये हजारों वीर बिश्नोइयों की एक साथ की आवाज है। इन बच्चियों ने अभी जोर-जोर से पुकारा था- धर्म की लाज जा रही है, खेजड़ी कट रही है- यह आवाज उनके कानों तक पहुंचते ही हजारों बिश्नोई नर-नारी दौड़ो-दौड़ो की आवाज लगाते इसी ओर आ रहे हैं।

सैनिक 2 - महामंत्रीजी सैनिक सत्य कहता है। लो यह आवाज पास ही में आने लगी है। अब क्या किया जाए?

महामंत्रीजी- सैनिकों! जब ऐसी बात है तो अब अपनी खैर मत समझो-चलो चलें। अपनी दुम दबाकर भागने में ही भलाई है।

सैनिक 1 - जब ये हाल है तो महामंत्रीजी, अब चलने में शीघ्रता करिये- इधर-उधर मत ताकिये-नहीं तो कुत्ता खीर नहीं खायेगा-वो मार पड़ेगी कि वृक्ष कटवाने की सब चौकड़ी भूल जावोगे।

सैनिक 2 - महामंत्रीजी! आप तो वीर हैं, अभी तो शेर के समान गरज रहे थे-एकदम इतनी गिरावट कैसे आ गई-अब दिखाईये न अपनी बहादुरी।

महामंत्रीजी- इतने जोरों का हल्ला सुनकर मेरी बहादुरी सब गुम हो गई।

आँखों के सामने धुँधला-धुँधला दिखाई दे रहा है। देह में कुछ कंपकंपी आ रही है।

सैनिक- महामंत्रीजी! सचमुच में मामला कुछ टेढ़ा ही दिखाई देता है। आपको इस समय कंपकंपी नहीं आयेगी तो क्या होगा? अब तो आप लौटने में शीघ्रता करिये। अन्यथा वह दुर्दशा होगी कि सारी शान मिट्टी में मिल जायेगी।

(महामंत्री का सैनिकों के सहित भाग जाना और ग्रामवासियों का आकर आपस में बातचीत करना)

अणदा- भाग गये, दुश्मन भाग गये।

इमरती- हाँ पिताश्री! हमारा एक साथ का हल्ला सुनकर वे भाग गये।

किसना- बच्चियो! वे कितने आदमी थे?

चीमा- जोधपुर नरेश के महामंत्री श्री गिरधरदास और उनके साथ दो सैनिक थे।

कान्ही- अणदा! बेटी इमरती! हमें यह नहीं समझ लेना ना चाहिये कि वे डरकर भाग गये। उन्हें अपने इस संगठन के साहस का बुरा लगेगा और वे इसे अपना अपमान समझकर जोधपुर महाराज से इस सम्बन्ध में उल्टी-सीधी बातें बताकर अब पुनः पूर्ण तैयारी से आ सकते हैं।

ऊदा- तो फिर भाइयो! हमको भी ऐसी स्थिति में उनका सामना करने के लिये तैयार रहना चाहिये।

किसना- देवी कान्ही! ऊदा! इमरती! आप इसकी कोई परवाह न करें। हम धर्म पर बलिदान होने वाले उन्हीं वीर बिश्नोइयों की संतानें आज भी मौजूद हैं जो धर्म-मर्यादा हेतु अपने प्राणों की बलि देते रहे हैं और देते भी रहेंगे। भाईयो! हम भगवान् जम्भेश्वर और अग्निदेव की साक्षी लेकर प्रण करते हुए लौटे कि यदि वे फिर से तैयारी से आयें और तोपें भी लाएं तो क्या? हम वृक्ष रक्षा एवं खेजड़ली की रक्षा के लिये बलिदान होने को तैयार रहेंगे-बोलो एक साथ।

तैयार रहेंगे।

तैयार रहेंगे।

तैयार रहेंगे।

लो अब हम सब भगवान् जम्भेश्वर के गीत गाते हुए लौटें।

गायन

अरे ऐ बन्धुओ आओ! धरें उर ध्यान जाम्भोजी का।
बजाकर हाथ की ताली, करें गुणगान जाम्भोजी का।।
अवतार ले जिसने बताया, मारग सत्कर्म का।
करें पालन सदा मन से, रखें एहसान जाम्भोजी का।।
खेजड़ी है हमारी माँ सदा, पूजन किया करते।
करेंगे हम सदा रक्षा बढ़ाएँ, मान जाम्भोजी का।।
अरे ऐ बन्धुओं आओ धरें, उर ध्यान जाम्भोजी का।
बजाकर हाथ की ताली, करें गुणगान जाम्भोजी का।।

दसवाँ दृश्य

(महाराजा अभयसिंह का राजदरबार)

राजा बैठे हैं-दोनों सैनिक आकर एक साथ प्रणाम करते हैं।

सैनिक- (एक साथ) महाराजाधिराज श्री जोधपुर नरेश के जीवन की जय हो।

नरेश- आयुष्मान हो सेवको। कहो सैनिको! कुछ घबराए से दिखाई दे रहे हो। महामंत्री गिरधरदास एवं खेजड़ली ग्राम के क्या समाचार हैं? ऐसा मालूम पड़ता है कि आप लोगों ने खेजड़ली ग्राम के प्रायः सभी वृक्ष कटवा ही लिये होंगे।

सैनिक 1- हे राजन्! क्या बतावें वृक्ष काटना तो दूर रहा, परन्तु वहाँ वृक्ष काटने के नाम से खड़े रहना भी मुश्किल है।

सैनिक 2- महाराज! ग्राम के बाहर खेजड़ियों के बगीचे में ज्यों ही पहुँचे तो तीन बालिकाएँ जिनकी आयु नौ से ग्यारह वर्ष के बीच थी और जिनक नाम दामी, चीमा और इमरती था। वे खेजड़ी वृक्ष की डाली से बँधे झूले पर बैठकर खेजड़ी की रक्षा के जोशीले गीत गा रही थी। महामंत्री ने ज्यों ही वृक्ष काटने की बात कही, त्योंही वे लपककर झूले से नीचे उतरी और उन्होंने वृक्ष काटने से एक दम रोक दिया और अपनी वीरता का परिचय देते हुए हमारे छक्के छुड़ा दिये।

नरेश- उन्होंने क्या कहा?

सैनिक 1 - वे गरजकर बोली कि अरे दुष्टो! हमारी इस गंगा, तुलसी, गाय के समान पवित्र एवं पूजनीया माँ खेजड़ी को काटने का इरादा क्यों कर रहे हो? अरे अधर्मियो! काटना तो दूर रहा, परन्तु

काटने का नाम लेने का साहस किया तो हम खेजड़ी पर बलिदान हो जायेंगी या तुम्हारी जीभ पकड़कर खींच लेगी पर खेजड़ी नहीं कटने देंगीं।

सैनिक 2 – महाराज! सैनिक जो कुछ कह रहा है, अक्षरश: सत्य है। उन बालिकाओं के जोश भरे शब्दों ने हमारे दिलों को भर्रा कर रख दिया। कहां तक कहें महाराज, उनका संगठन देखकर हम अपनी दुम दबाकर ऐसे भागे कि जोधपुर शहर के किनारे आकर ही दम लिया।

नरेश– ठीक है महामंत्री! गिरधरदास कहाँ है? उन्हें मेरे पास बुला लाओ। उनसे पूरी-पूरी जानकारी मिल जावेगी।

(सैनिकों का महामंत्री को बुलाकर लाना)

सैनिक 1 व 2 – महाराज महामंत्रीजी पधार रहे हैं।

नरेश– उन्हें बेधड़क आने दो।

महामंत्री– महाराजाधिराज श्री जोधपुर नरेश के जीवन की जय हो।

नरेश– आयुष्मान हो महामंत्रीजी! कहिये खेजड़ली ग्राम के क्या हाल हैं? वहाँ के प्राय: सब वृक्ष कट ही गये होंगे। अब केवल कोयला बनाना ही बाकी रहा होगा।

महामंत्री– राजन्! क्या बताऊँ? कुछ कहते नहीं बनता। खेजड़ली ग्राम एवं उसके आसपास के चौरासी ग्रामों के बिश्नोई इतने गर्रा गये हैं और स्वतंत्रता से रहते हैं, शासन का उन्हें कोई भय नहीं है। उन्होंने वृक्ष काटने से रोक दिया।

नरेश– इसके लिये वे क्या कहते हैं?

महामंत्री– वे कहते हैं कि हमारे धर्म में खेजड़ी काटने को मना किया है। आज तो उन्हें वृक्ष के लिये मना किया। कल वे राज्य के नियमों को तोड़ेंगे और कर भी नहीं देंगे। फिर राज्य का कार्य कैसे चलेगा? वे धर्म की ओट लेकर वृक्ष बचाना चाहते हैं। उन्हें यदि इसके लिये छूट दी गई तो कल दूसरी बाधा लेकर खड़े हो सकते हैं।

नरेश– जब ऐसा है तो मेरी राय में किसी के धर्म में हस्तक्षेप करना उचित नहीं। क्योंकि मेरा राज्य धर्म निरपेक्ष राज्य कहलाता है। गरीब से लेकर अमीर तक को धर्म पालने की पूर्ण स्वतंत्रता है। यदि

उनके धर्म के नियमों में वृक्ष काटना मना है तो कोयले के लिये कई दूसरे प्रयास भी किये जा सकते हैं।

महामंत्री– नहीं राजन्! यह वृक्ष काटने का ही विषय नहीं है, यथार्थ में राज्य के नियमों को तोड़ने का विषय है। इसलिये उनका दमन करना अति आवश्यक है।

नरेश– महामंत्रीजी! कोई भी कार्य बिना सोचे विचारे कर देना अनुचित है। मेरी राय है कि इसके लिये मुस्लिम धर्म गुरु श्री काजीजी या मौलवीजी और हिन्दू धर्म के विद्वान् पण्डितों का मत भी लिया जावे। देखें! वे क्या सलाह देते हैं, वैसा ही फिर सोच समझकर इस सम्बन्ध में कार्य किया जावेगा। सेवको! आओ। शहर के विद्वान् पंडित श्री मुरलीधरजी और मुसलमानों के मौलवी जनाब वली साहब को यहां महलों में बुला लाओ।

(मौलवी और पंडित को बुलाकर लाना)

दूत– (महाराज को अभिवादन करने के बाद।)

सैनिक 1 – महाराज विद्वान् पण्डितजी एवं मौलवी साहब महलों में पधार रहे हैं।

नरेश– उन्हें आदर पूर्वक आने दीजिये।

(राजा का उठकर प्रणाम करना और कहना)

पधारिये धर्म गुरु! आप दोनों का हार्दिक स्वागत है। आईये विराजिये।

पंडितजी– कहिये राजन् महलों में आपने हमें किसलिये याद किया है। कृपाकर बताइये।

मौलवी साहब– फरमाइये बादशाह इस तरह की राजमहफिल में क्यों बुलाया है? मेहरबानी कर बताइये।

नरेश– आदरणीय पण्डितजी एवं मेहरबान मोलवीजी! आप दोनों को अपने-अपने धर्म का विशेष ज्ञान है या जानकारी है। आप हमेशा धर्मोपदेश करते रहते हैं। आप हमें उचित सलाह दें कि प्रजा में कोई समाज अपने धर्म का यथा विधि पालन करता है, तो क्या राजा को उनके धर्म पालन में किसी प्रकार का हस्तक्षेप करना चाहिये?

पंडितजी– नहीं राजन्! बिल्कुल नहीं! यह तो उस राज्य के राजा के लिये

परम सौभाग्य हे कि प्रजा अपने-अपने धर्म का बराबर पालन तो करती है। फिर आपका राज्य तो धर्म निरपेक्ष राज्य कहलाता है। प्रत्येक धर्मावलम्बियों को अपने-अपने धर्म पालने की पूर्ण स्वतंत्रता है।

मौलवीजी- हे बादशाह! ये पण्डित ठीक फरमाते हैं, बादशाह का यह काम है कि वह किसी के मजहब को दखल न देकर रैयत को मजहब की तरफ झुकावें। फिर आपके राज्य में ऐसे कौन लोग हैं, जिसके सबब या मजहब के बारे में इस तरह जिक्र किया जा रहा है।

(बीच में बात काटकर गिरधरदास का कहना)

गिरधरदासजी- महाराज तो समझते नहीं है। खेजड़ली ग्राम एवं उसके आसपास के चौरासी ग्रामों में खेजड़ी के अनेकों वृक्ष लगे है। उनको कटवाकर राज्य के बिछियागढ़ के किले के लिये चूने की भट्टी लगवाकर कोयला बनवाना है। जब हम वृक्ष कटवाने खेजड़ली ग्राम पहुँचे और वृक्ष काटने का इरादा किया ही था कि वहाँ के बिश्नोई लोगों ने हमें रोका और गरज-गरज कर कहा कि खेजड़ी हमारा पूजनीय कल्पवृक्ष के समान है। हमारे धर्म में उनकी एवं वृक्षों की रक्षा करना हमारे गुरुजी ने बताया है। हम चाहे बलिदान हो जायेंगे, परन्तु वृक्ष नहीं कटने देंगे। महानुभावों! आप ही बताईये कि धर्म पालन वृक्षों में ही अटका है और कहीं नहीं।

मौलवीजी- यह तो हम भी कई दिनों से सुनते और देखते आये हैं कि राज्य के बिश्नोई लोग खेजड़ी की खास कर अदब करते है। उनके ग्रामों में पशु-पक्षी आदि का कोई शिकार नहीं कर सकता और न ही कोई वृक्ष काट सकता है।

पंडितजी- राजन्! ऐसा तो हमने भी सुना है कि वे अपनी धर्म-मर्यादा पालते हुए वृक्ष रक्षा पर बलिदान होने को तैयार रहते हैं।

महामंत्री- राजन्! यही तो देखना है कि क्या वे सचमुच में कहते हैं वैसा करते हैं या नहीं। सब पता लग जायेगा। राजाज्ञा पाकर जब हम लोग सेना सहित खेजड़ी काटने जायेंगे तो उन्हें भागते रास्ता नहीं

मिलेगा। हमें केवल महाराजा की आज्ञा तथा सेना की आवश्यकता है।

नरेश- आदरणीय महानुभावो! यदि महामंत्रीजी नहीं मानते हैं तो इन्हें अवश्य ही जाने दिया जावे। समय आने पर इनकी बहादुरी का पता लग जायेगा। महामंत्री आप आवश्यकतानुसार सेना लेकर जाईये। मैं तुम्हें आज्ञा देता हूँ कि वृक्ष कटवाकर कोयला बनवा लिया जाए। महामंत्री जाने के पहले यह अच्छी तरह विचार लेवें कि यदि इसका कोई दुष्परिणाम निकला तो आप स्वयं जिम्मेदार हैं। अच्छा तो जाने की तैयारी करिये और जाईए।

महामंत्रीजी- बहुत अच्छा राजन्! जाता हूँ। सैनिको! जावो खेजड़ली चलने की तैयारी करो।

सेवक- जो आज्ञा महाराज! इसी का हम अभी तक इन्तजार कर ही रहे थे। लो चलने की सूचना दिये देता हूँ-अब देखते हैं कि बिश्नोई कितनी बहादुरी दिखाते हैं। सेना को देखते ही सब भागते नजर आयेंगे। एक भी खड़ा दिखाई नहीं देगा।

ग्यारहवां दृश्य

(खेजड़ली ग्राम के बाहर मंत्री का डेरा डालना)

महामंत्रीजी- वीर सैनिकों! महाराजाधिराज श्री जोधपर नरेश जी की आज्ञा के अनुसार राज्य के महामंत्री पद से मैं तुम्हें आदेश देता हूँ कि तुम सब सैनिक चार-चार की टुकड़ियों में होकर इस खेजड़ली ग्राम के लगे बगीचे के खेजड़ी के वृक्षों को काटना शुरू करो।

शैर

सुना दो हर एक व्यक्ति को, यह ऐलान मंत्री का।
फिरा दो हर जगह, चारों तरफ फरमान मंत्री का।।
दबाओ हर जगह उनको, दबे न जो दबाने से।
जिसे चाहे मिटा डालो, उसको फौरन जमाने से।।
क्रोध दृष्टि से मेरी, कोई न बचने पायेंगे।
आयेंगे सामने जो मेरे, वे ही कुचले जायेंगे।।

देख क्या रहे हो? खेजड़ी काटना आरम्भ करो।

बारहवाँ दृश्य

(अणदा, कान्ही का घर)

कान्ही अपनी बच्ची दामी, चीमा, इमरती के साथ गीत गा रही।

गायन

बलि जाऊँ रे बारम्बार चरखो उपकारी।।टेक।।
तीन रुपया में तेने लायो।
देख तूं कितनो काम बनायो।।
रयो तूँ ही ये दार-मदार।।चरखो उपकारी।।
छे छोरया री करी सगाई।
जी में पाँचाने परणाई।।
तूँ ही घर भर को दातार।।चरखो उपकारी।।
बीस बरस तक तने चलायो।
नहीं मोल गज कपड़ो लायो।।
तूँ घर भर को सिंगार।।चरखो उपकारी।।
बलि जाऊँ रे बारम्बार चरखो उपकारी।।

कान्ही- बेटी दामी, चीमा और इमरती! यह आवाज काहे की आ रही है? मालूम पड़ता है कोई आकर वृक्षों पर प्रहार कर रहे हैं।

दामी- हाँ माताजी! ऐसा तो मुझे भी मालूम पड़ता है।

चीमा- माताजी चलने की शीघ्रता कीजिये। वृक्ष पर प्रहारों की आवाज बढ़ती ही जा रही है।

इमरती- माँ! माँ! चरखा बंद करो। गाना गाना छोड़ो। एक दम चल पड़ो।

(चारों का जाकर देखना)

कान्ही- अरे हत्यारे! ये क्या कर रहे हो? हमारी पूजनीया माँ खेजड़ी पर प्रहार करते तुम्हें शर्म नहीं आती। तुम्हारा पापी हृदय फट क्यों नहीं जाता।

शेर

अरे दुष्टो इन वृक्षों पर, क्यों वार करते हो।
अरे सूझा है क्या तुमको, अत्याचार करते हो।।
मां खेजड़ी से इस तरह, व्यवहार करते हो।
हमारा क्यों बदले में, इसके संहार करते हो।।

महामंत्री- शांत! जरा शांत! जरा धैर्य से बातें करो! इतने उतावले मत होओ।

कान्ही- इधर तुम धैर्य की बातें कह रहे हो और उधर वृक्षों को काटने के

लिये तैयार हो रहे हो।

शेर

हम समझती हैं, तुम्हारी बुद्धि में है भ्रान्ति।
धैर्य छूटा जा रहा है, किस तरह हो शान्ति।।

महामंत्री- तो आप लोगों का आखिर क्या विचार है?

दामी- हम लोगों को वृक्षों पर प्राण देना स्वीकार है, परन्तु इन्हें काटने देना सर्वथा अस्वीकार है।

महामंत्री- तो फिर मरने के लिये तैयार हो जाओ। हे मूर्खो! राजाज्ञा का उल्लंघन करते तुम्हें लाज नहीं आती है। मेरी सेना और मुझे देखकर तुम्हारी आत्मा नहीं थर्राती है, जो इस तरह निर्भीक होकर बातें कर रहे हो।

शेर

वृक्ष काटना छोड़ दें, हम में ये क्षमता नहीं।
मूर्खो है क्या तुम्हें, प्राणों की ममता नहीं।।

चीमा- ममता! प्राणों की ममता तो थी। परन्तु तुम जैसे अत्याचारियों ने पूजनीया खेजड़ी सरीखे वृक्षों को काटने का इरादा किया। हम धर्म वीरों की आत्मा को ठेस पहुंचाई है, तभी से ममता मर गई।

महामंत्री- तो तुम्हें राजाज्ञा का भय नहीं है।

इमरती- हाँ! इसलिये कि तुम्हें किसी के धर्म का ज्ञान नहीं।

महामंत्री- देखो, ज्यादा तनकर बातें ना करो।

दामी- हम भी कहते हैं, तुम परमात्मा के भय से डरो।

महामंत्री- क्या तुम्हें यह नहीं मालूम कि यह राज्य किसका है?

चीमा- प्रजा के नाते हमारा और किसका है।

शेर

ये सुनहरे चमकीले कपड़े, जो तन पे तुम्हारे है।
ये मोती अरू मुक्ता के, मुकुट जो सिर पर धारे हैं।।
हमारे ही मेहनत से जुटे, सामान सारे है।
पले हो अन्न खाकर, टुकड़े वो भी हमारे हैं।।

महामंत्री- बस ज्यादा बक-बक मत करो चुप रहो भला चाहते हो भाव से मेरे पैरों पर झुककर क्षमा मांगो और वापिस अपने घर लौट जाओ।

इमरती- अरे तुम तो क्या? हमारे ये मस्तक भगवान जम्भेश्वर, मां

खेजड़ी और पावन श्री बिश्नोई धर्म के सिवा किसी के आगे नहीं झुक सकता है। जो सिर तुम्हारी मान मर्यादा के लिये तुम्हारे सामने झुकता था, परन्तु इस अधर्म के सामने नहीं झुक सकता।

महामंत्री- बस खबरदार-अब ज्यादा बातें न करो। अब खेजड़ी कटकर ही रहेगी। सैनिकों उधर क्या देख रहे हो! इन खेजड़ी के वृक्षों पर अपना प्रहार शुरू करो।

दामी- ये क्या कहा प्रहार करो।

शेर

जो न मानो इस तरह तो, तो ये हेकड़ी होगी।
बलिदान होंगे हम यहाँ, सम्मुख खेजड़ी होगी।।
हर वृक्ष पर गर्दन, हमारी ही पड़ी होगी।
निश्चय जान लो पूरी, हमारी ही अड़ी होगी।।
हम मरने को तैयार हैं.....।

(कान्ही का खेजड़ी पर सिर रखकर कहना)

अरे पापियो! अच्छा तो लो खेजड़ी कटने के पहले हमारी इस गर्दन पर प्रहार करो।

(सैनिकों का प्रहार करने को तैयार होना और कान्ही का कहना)

शेर

दिख रही है खेजड़ी में आत्मा मुझे।
श्रद्धा फूल चढ़ाती हूँ, परमात्मा तुझे।।
आत्मा शक्ति का प्रभु बन, हार जाना तुम।
केवट बनकर नाव को, भव पार कराना तुम।।

(सैनिकों का प्रहार कर सिर काट देना)

दामी- क्या माताजी बलिदान हो गई- मुझे भी जीकर अब क्या करना, बलिदान होना ही है।

महामंत्री- अरी उधर क्या देख रही हो, तुझे भी अगर बलिदान होना है तो हो जा तैयार। देखना, ऐसा न हो कि मेरी चमकती तलवार को देखकर भाग पड़े।

शेर

अगर कामना हो ऐसी, तो मौत के सामने आओ।

मरना जो चाहते हो तो, मर के दिखलाओ।।
अगर भला चाहो, मुख छिपा जाओ अपने रास्ते।
मरती हो क्यों, बेकार इन वृक्षों के वास्ते।।

दामी- अरे दुष्ट हम डरने वाली नहीं हैं।

शेर

काट वृक्षों को परलोक का, असबान बन तूँ।
जिद् में आकर अरे, पापी आत्मा न बन तूँ।।
राज-वैभव-धन और, सम्पदा को वार दे।
धर्म के आगे तेरी, इज्जत पे ठोकर मार दे।।
फूल सी इस काया पर, अन्याय तू ढ़ाता है क्यों।
वृक्ष के संताप में, घुल-घुलकर मरा जाता है क्यों।।

अरे अधर्मी! हम इतने कायर नहीं हैं जो डरकर भाग जायें। ले इस सिर को मैं खेजड़ी पर रख देती हूँ, कुल्हाड़ी से अपना वार कर।

(तर्ज राधेश्याम)

दामी- मन में कैसे मैं धैर्य धरूँ, फटती अब मेरी छाती है।
विरह की ज्वाला जलती है, अरू माँ अब तेरी याद आती है।।
अच्छा न हुआ देखा मैंने, हे मातृ तुम्हारे टुकड़ों को।
रो-रो के किसी को कह न सकी, हे माँ तुम्हारे दुखड़ों को।।
हे माँ मेरी है प्राणेश्वरी, क्या जल बिना मीन भी रहती है।
गंगा की पावन धारा क्या, उत्तराखण्ड की बहती है।।
तुझ पर प्राण गँवाती हूँ, बस इतना ही करवा देना।
जन्म-जन्म ये याद रहे, सिर चरणों पे धरवा देना।।
अरे हे दुष्टो! मुझ पर अपना वार करो और काम तमाम करो।

महामंत्री- सैनिकों इसकी गर्दन भी वृक्ष पर रखते ही धड़ से अलग कर दो।

(सिर धड़ से अलग करना)

चीमा- अरे ये क्या बहन दामी ने भी वृक्षों की रक्षा के लिये अपना सिर कटा डाला। मैं भी जीकर क्या करूँगी? हे दुष्टों! मुझे भी मौत के घाट उतारो।

शेर

तू चीज तो है क्या, हम फौलाद का खम्भा हिला देंगे।
अधर्म की जड़ें भी हैं, खोखली करके दिखा देंगे।।

जान ले धर्म पर मरने से ही, हमारा कल्याण है।
धर दे कुल्हाड़ी सिर पर, ऐलान है ये ऐलान है।।

(चीमा का बलिदान होना)

महामंत्री- अभी इधर-उधर क्या देख रही है, वृक्ष पर अपनी गर्दन रखकर इस पावन यज्ञ में तूं भी हाथ धो ले।

इमरती- ले दुष्ट मुझ पर भी अपना वार कर।

शेर

कसम है गुरुदेव की, यह करके दिखायेंगीं।
इक्के-दुक्के चार क्या, हजारों मर जायेंगीं।।
लेकर बढ़ इधर कुल्हाड़ी, इस तरह अपने हाथ में।
मेरा भी वध तूँ कर दे, मेरी बहन के साथ में।।

(इमरती का भी बलिदान होना)

तेरहवाँ दृश्य

(करमा, गौरां एवं ऊदा की बातचीत)

गायन

म्हाने आछो लागे महाराज, वृक्षाँ पर मर जाणों।।टेक।।
लख चौरासी फैरे फिर कर, आखिर नर तनु पाणों महान्।
गुरुदेव हैं जम्भ हमारे, उनका ही गुण गाणों महाराज।
प्यारा बिश्नोई धर्म हमारा, कीरती खूब बढ़ानो महाराज।।

करमा- भाई ऊदाजी, बहन गौरां, माताजी और दामी, चीमा, इमृति को बगीचे की ओर गये बहुत देर हो गई है। घर पर वे अभी तक नहीं लौटी हैं। क्या कारण है, क्या तुमने कहीं उन्हें देखा है?

ऊदाजी- बहन करमां और गौरां! मैनें अभी-अभी ऐसा सुना है कि महामंत्री गिरधरदास राजाज्ञा लेकर पुनः बड़ी सेना लेकर ग्राम के बाहर आ गया है। उनके सैनिकों ने खेजड़ी वृक्षों पर प्रहार किया ही था कि उनकी आवाज सुनकर कान्ही तीनों बच्चियों को लेकर बगीचे में गई और उन्होनें सैनिकों को बहुत रोका; परन्तु उनकी एक भी नहीं मानी। तब वृक्षों के बदले में अपना बलिदान देना उचित समझा। वृक्षों पर क्रमशः अपने सिरों को कटाकर वे दुष्टों के द्वारा बलिदान हो गई हैं।

करमा- अरे अब हमारा क्या होगा?

(विलाप)

छोड़ के म्हाने कुन गई बाई ये काँई थारी ये कैसे गति हुई। कह के बुलावे रे म्हारी माई ए। कैसी म्हाँकी ये कैसी दुर्गति हुई?

ऊदाजी- अरी बच्चियो! अब चिन्ता करने का समय नहीं है। हमें भी धर्म-प्रेम का परिचय देना है। वे तो वीर गति को प्राप्त हो चुकी हैं। मैं इस अपूर्व बलिदान की सूचना राज्य के सारे चौरासी बिश्नोई ग्रामों में देने जा रहा हूँ।

गौरां- भाई ऊदाजी! जब हमारी पूजनीया चाची व बहनों ने आत्म-समर्पण करके धर्म-प्रेम का परिचय दिया है। अब हमारे जीने को धिक्कार है! चल बहन करमा! अन्तिम दर्शन करें।

(जाकर देखना)

खेजड़ली का बगीचा

(खेजड़ी वृक्षों के पास चारों के शव पड़े हुए हैं)

गौरां- धन्य है पूजनीया चाचीजी! मेरी प्यारी वीर बहनो! वीर बिश्नोई कहलाने का प्रण कर आज सबको दिखाया है।

शेर

हे माँ कैसे करें या डूब मरें आज तूँ प्राणों से प्यारी माता गई।
प्यार करेगा कौन अब इतना हमें, सारे घर की तूँ विधाता गई।।

अरे हे पापियो! क्या देख रहे हो? हमारा सिर भी काटकर धड़ से अलग कर दो।

महामंत्री- अरे बच्चियो! कहने से कार्य नहीं चलेगा। जरा बलिदान होकर भी तो बताओ। अपने हाथों से अपना प्राण गमाना कठिन है।

शेर

दिखाता मौत का भय, तो जरा सामने आओ।
हो शक्तिवान तुम तो, अपनी शक्ति दिखलाओ।।
कह के मरना है कठिन, कहना जरा आसान है।
बक-बक करती है क्यों, बच्ची अभी नादान है।।

अरे बच्ची! तूं भी प्राण दे दे और अपनी धर्म प्रेम की प्रतिज्ञा

पूरी कर।

करमां- बहन! चलें-लौट चलें।

(करमां एवं गौरां का घर लौट जाना)

चौदहवाँ दृश्य

स्थान

(अणदा का घर)

अणदाजी- भाई चाचोजी! कुछ खबर है? देवी कान्ही वीर बच्चियाँ दामी, चीमा और इमृति-ये वृक्षों पर सिर कटाकर बलिदान हो गई हैं। ऊदाजी भी लौटे नहीं हैं। चाचाजी भाई! विलम्ब का समय नहीं, एक दम चल दो।

महामंत्री- सैनिको! कोई दो वीर पुरूष भगत इधर ही आ रहे हैं। मालूम पड़ता है कि उन बच्चियों के कुटुम्बी लोग है।

सैनिक- आने दीजिये महामंत्रीजी! सिवा आत्म समर्पण के वे करेंगे ही क्या? उनका सामना करने के लिये तैयार हो जाओ।

(जाकर देखना)

अणदा- अरे अत्याचारियो! ये क्या किया? देवी कान्ही जैसी साध्वी को मौत के घाट उतार दिया। नन्ही मुन्नी बच्चियों का वध कर खून से अपने हाथ धो लिये। हे अधर्मी! तुझे धिक्कार है-बारम्बार धिक्कार है।

शेर

प्रजा को बना के पागल, राज नीचा दिखायेगा।
धिक्कार है इस जिद्द को, छति अपनी करायेगा।।
देखो-देखो अभी जिसने, प्राण अपने गंवाये हैं।
करणी उत्तम करके ऐसी, ध्वजा धर्म फहराये हैं।।

महामंत्री- अरे धर्म उपदेशक! उधर धर्म की ध्वजा को क्यों फहरा रहा है? तूँ भी अपनी बातें चढ़ाकर मोक्ष का अधिकारी क्यों नहीं बन जाता?

शैर

कहता है वह करता नहीं, यदि करके तुझे दिखाना है।
कथनी के पहले करणी कर, क्यों नहीं भेंट चढ़ाता है।।

हम नियमों के हैं कठोर, नहीं दया तनिक दिखलायेंगे।
दो चार की कहे कौन, हजारों मर जायेंगे।।

चाचा- अरे अधर्मियो! तुम क्या हमें डराकर पीछे लौटाना चाहते हो?

शैर

पीछे पग वीरों का धरना, कुल में दाग लगाना है।
इससे बढ़कर मोक्ष कहो, जो जीते जी मर जाना है।।
ये कायरता की संतान नहीं, जो कहकर हट जायेगी।
बलिदान होयगी वृक्षों पर, अपने वचन निभायेगी।।

महामंत्री- हे वीरो! मरकर अपनी वीरता का परिचय क्यों नहीं दे देते हो। सैनिको! इन पर भी कुल्हाड़ी से अपना प्रहार करो।

चाचा- ले अपना प्रहार कर।

(ऊदा का चाचा को हटाकर स्वयं ने कटवाने को अपना सिर रखना और कहना) पहले मैं अपना सिर कटवाऊँगा।

चाचा- नहीं भाई ऊदा! पहले मुझे मरने दो।

महामंत्री- अरे नालायको! आपस में बहस क्यों कर रहे हो? जिनको प्राण देना है अपना सिर रखो।

(अणदा का बलिदान हो जाना)

वहाँ पर ऊदा का आना और करमा, गौरां का गीत गाना।

गौरां- बहन करमां, अणदा और चाचा को गये बहुत देर हो गई है जरा चलकर तो देखें, उनके क्या हाल हैं? आओ अपने वीरता के गीत गाते चलें।

गायन

(दोनों का सामूहिक गीत गाना)

म्हें हो जावा बलिहार, माता खेजड़ी ऐ।।टेक।।
म्हें तोने रोज मनवाहा, अरू अपनो धर्म निभावाहा।।
म्हारो कांई करसी तलवार, माता खेजड़ी ऐ।
म्हे हो जावाँ बलिहार, माता खेजड़ी ऐ।।
म्हें बिश्नोईयाँ री बेटी हाँ, फिर जो कोई म्हा से खेटी हाँ।
मर हो जावाँ भव-पार माता खेजड़ी ऐ।।
म्हे हो जावाँ बलिहार, माता खेजड़ी ऐ।

म्हे थारी रक्षा करावाला बदले, अपनो शीश कटायन वाला।।
म्हारो जीणों फिर धिक्कार माता खेजड़ी ऐ।

ग्रामीण 1 – बच्चियों! करमां और गौरां! तुम इधर क्या गीत गा रही हो? उधर तुम्हारे पूज्य अणदाजी वृक्ष पर अपना सिर कटवाकर बलिदान हो गये हैं। दुष्टों ने अभी भी खेजड़ी काटना बंद नहीं किया है। धड़ा धड़ लोग बलिदान होकर अपनी वीरता का परिचय देते चले जा रहे हैं।

(दोनों का घबराकर कहना)

गौरां– अच्छा तो बहन घबरा मत! जब ऐसा है, तब अपने भी उसी मार्ग से चलेंगे, जहाँ वे पहुँचे। देर न करो। चलो चलें।

(दोनों का जाना)

महामंत्री– सैनिकों उधर तो देखो कितनी तेजी से दो बच्चियाँ इसी ओर आ रही हैं।

सैनिक 1 – लो! वे आ ही गई।

सैनिक 2 – महामंत्रीजी! मालूम पड़ता है ये वे ही बालिकाएँ हैं, जो थोड़ी देर पहले अपनी वीरता दिखाकर लौट गई थी।

सैनिक 1 – हां महाराज! सैनिक ठीक कह रहा है। ये वे ही बच्चियाँ हैं, जिन्होंने केवल वीरता ही नहीं दिखाई थी बल्कि अपनी बातचीत में आपके छक्के छुड़ा दिये थे। अब आकर क्या करेंगी? भगवान ही रक्षक है।

महामंत्री– करेंगी क्या? मरेगी ही और करना धरना क्या है? फिर से देखता हूं इनकी बहादुरी को जरा आने तो दो।

गौरां– अरे ये क्या हुआ धर्म की मर्यादा रखने के लिये खेजड़ी माँ पर चाचा अणदा ने अपने प्राण गवाँ दिये। बहन करमां! अब अपने जीने को धिक्कार है। हे वीर तुम्हें धन्य है जो योगियों को भी दुर्लभ गति को प्राप्त हो गये।

महामंत्री– अरे धन्य बताने वाली वीरों की बच्चियो! तुम भी अपने प्राण गवाँ कर अपने को धन्य क्यों नहीं बना लेती? रुक क्यों गई हो? तुम्हें आते ही सिर कटवा कर मर जाना था। प्राण का प्रेम है तो वापिस घर लौट जाओ। क्यों व्यर्थ ही मौत की चपेट में आती हो?

शेर

बड़े स्वादिष्ट मेवे हैं, बड़ा ही शुद्ध पानी है।

मनोहर स्वर्ग से बढ़कर, यहाँ की जिन्दगानी है।।
इस राज्य की शक्ति सदा, चरणों में जिसके झुकती है।
तमाशा देख और कुछ दिन, क्यों बेकार मरती है।।
बहुत कुछ सुन चुका, बन्द कर अपनी कहानी को।
इसी अरमान से खो देगी तूँ, अपनी जिन्दगानी को।।

अर्थ

अरी व्यर्थ क्यों अपने प्राणों को गवाँ रही हो।

शेर

जावो खेलो आनन्द करो, माता का मोह बढ़ाओ तुम।
नाहक प्राण गवाँकर के, लोगों का हृदय दुखाओ तुम।।

करमां– अरे पापी क्यों प्राणों का लोभ दे रहा है?

शेर

एक तिल सरके न पग, शक्ति हो बरबाद की।
वज्र का खम्भा न क्यों हो, लाठ हो फौलाद की।।
काल भी आया यदि तो, सम्मुख होते जायेंगे।
वृक्षों को छोड़ेंगे नहीं, और न भाग के जायेंगे।।

गौरां– अरे अधर्मी!

शेर

नहीं समझा है तूने अभी तक, अरमान बच्ची का।
धर्म प्राण प्यारा है, नहीं जान बच्ची का।।
मिले जो राज्य दुनिया का, धर्म पर वार देंगे हम।
तेरी इस जिद्द पर अपने को, संहार देंगे हम।।

गायन

खेजड़ी क्यों काटे रे अज्ञान।।टेक।।
हे ये हमारी पूजनीया माता और धर्म की शान।
वह माँ है बेकार सपूती जिन कायर पूत जाया है।।
वह पूत कपूत है क्या जिन माँ का दूध लजाया।
वीरों की संतान वीर को मत समझे नादान।।१।।
वीर गति को शुभ बेला में, अपना पुण्य कमा लेंगे।
बड़े भाग्य होयेंगे हमारे, शहीदों में नाम लिखा देंगे।
वृक्ष नहीं कटने देंगे हम, दे बदले में जान।।२।।

खेजड़ी क्यों काटे रे अज्ञान।

महामंत्री- जब ऐसी वीर हो, तो फिर रखो वृक्ष की डालों पर अपना सिर। इतनी देर भी किस लिये कर रही हो?

(गौरां का वृक्ष पर सिर रखकर कहना)

गौरां- अरे! नीच।

शेर

अधिकार हमारा जितना था, कहकर के समझाया है।
अपनी हठधर्मी करके तूने, क्यों नीति को ठुकराया है।।
वज्र का दिल हमारा, मोम सीसा का नहीं।
भय खाना किसी से, आज तक सीखा नहीं।।
अब उतर आया है तूं, ऐसे अधर्म के काम पर।
धिक्कार है तुझको अरे, थूक है तेरे नाम पर।।
डूब मर जा कहीं, बदलेगी ये हालत तेरी।
निकलेंगे प्राण मुश्किल से, बिगड़ेगी सूरत तेरी।।

महामंत्री- अरे सैनिको! इसकी बातें क्या सुन रहे हो? काम तमाम करो।

सैनिक 1 - महामंत्रीजी! काम तो तमाम करना है, परन्तु अपने को इस तरह जोश भरी बातों को सुनने का अवसर कब मिलेगा।

सैनिक 2 - धन्य है इन अबोध बच्चियों की वीरता को। महामंत्रीजी आप भी इनके सामने कितने बहादुर हैं, जो ऐसी-ऐसी मधुरवाणी को क्या शान्ति पूर्वक सुन रहे हैं। जरा भी हिचक नहीं रहे हैं।

महामंत्री- सैनिक बक-बक क्या करता है, काम तमाम क्यों नहीं कर देता।

करमां- अच्छा तो ले।

शेर

किस तरह वीर की, संतान होती देख लो।
कितनी ममता धर्म में है, बलिदान होती देख लो।।
खेजड़ी पर किस तरह, दे जान देती देखले।
हँस-हँस के किस तरह, प्राण गवाँती देख ले।।

हुआ सो अच्छा हुआ, कुछ कहना ही बेकार है।
घर कुल छोड़ी शीश पर, जो गले का हार है।।

गौरां- बहन करमां पहले मुझे मरने दो।

करमां- नहीं बहन पहले मैं मरूँगी।

(दोनों का बलिदान होना)

पन्द्रहवाँ दृश्य

(स्थान-ऊदा का घर)

ऊदाजी- भाई किसना, भाई अणदा, कान्ही बगीचे की ओर गये हैं। पीछे-पीछे बहन करमा और गौरां भी यहाँ से घटनास्थल की तरफ गई थी। वे अभी तक लौटी नहीं हैं, बहुत देर हो गई है। ऐसा लगता है कि वे भी बलिदान हो गई हैं।

किसना- ऊदाजी आप आसपास के चौरासी बिश्नोई ग्रामों में इस घटना की सूचना देने गये थे। सूचना की या नहीं की और यदि की है तो किन-किन ग्रामों में गये थे बताओ तो सही।

ऊदाजी- भाई किसना मैं गुड़ा, हिंगोली, तिलवासणी, फिटकासणी, बिसलपुर, रुड़कली, बालावास, बीकमकौर, सरमांडी, पांचला आदि ग्रामों में जाकर ज्यों ही वृक्ष कटने की सूचना दी, त्योंहि लोग सुनकर जोश में तिलमिला उठे और जोश भरे शब्दों में गरज कर कहने लगे।

किसना- क्या कहने लगे?

ऊदाजी- वे बोले कि यह सूचना हम लगातार अन्य ग्रामों में दे रहे हैं और वृक्षों की रक्षा के लिये हम सब मरने को तैयार हैं और रहेंगे। अब हम पूर्ण तैयारी के साथ ग्रामों के सब नर-नारी, बच्चे, हजारों की संख्या में आ ही रहे हैं। आप उन दुष्टों का सामना करने में तनिक भी संकोच नहीं करें। हम वीर बिश्नोइयों की संतानें हैं। हम अपना तन-मन-धन सर्व अर्पण कर देंगे, परन्तु धर्म से विचलित नहीं होंगे और न वृक्ष कटने देंगे-नहीं कटने देंगे-नहीं कटने देंगे।

किसना- भाई ऊदा! अब हम घर न चलकर सीधे ही घटना स्थल पर चलें। देखें क्या हाल है?

ऊदाजी- भाई किसना! क्या बताऊँ? आज मेरी बच्ची सुभद्रा का शुभ

लग्न का दिन है। विवाह में मेरा रहना अनिवार्य है। परन्तु इतना सब होते हुए भी मैं तुम्हारे साथ ही चलता हूँ। देखें अत्याचारी क्या कर रहे हैं?

(जाकर देखना)

किसना- अरे दुष्टों! बहुत ही बुरा किया। सारे परिवार का वध कर डाला। कन्या अमृता, चीमा, दामी, भाई अणदा, देवी कान्ही को मार डाला। अरे इधर बच्ची करमां और गौरां का भी सिर धड़ से अलग पड़ा है। आज मैं ये क्या देख रहा हूँ? हे भाई! तुम बलिदान हो गये हो। हे बच्चियो! धन्य है, तुमने मरकर जीवन को सार्थक कर लिया। हाय बहन कान्ही हाय करमां, गौरां.....।

(किसना का बेहोश होकर गिर जाना)

ऊदा- अरे भाई किसना! ये क्या आप तो ये सब हाल देखकर बेहोश हो गये। हे भाई! यह कायरता मत दिखाओ। जरा आँखें खोलकर मेरी ओर देखो। तुम्हारी ये दशा देखकर मेरा धैर्य भी छूटा जा रहा है। भैया! भैया! उठो चुप क्यों हो? कुछ तो अपने इस भाई से बोलो।

किसना- तुम कौन हो?

ऊदा- मैं तुम्हारा छोटा भाई ऊदा हूँ।

किसना- तुम कहाँ खड़े हो?

ऊदा- मैं यहां खेजड़ी वृक्ष के नीचे बैठा हूँ।

किसना- मैं कहाँ हूँ।

ऊदा- तुम भी इसी खेजड़ी माँ के नीचे लेटे हुए हो और तुम्हारा सिर मेरी गोद में है।

किसना- हम यहाँ क्यों आये हैं?

ऊदा- भाई किसना! जोधपुर राजा के महामंत्री गिरधरदासजी अपनी सेना के साथ राजाज्ञा लेकर अपने ग्राम के बगीचे में खेजड़ी वृक्षों पर ज्योंही प्रहार करने को तैयार हुए, त्योंही खेजड़ी वृक्षों की रक्षा के लिये बहन कान्ही, पुत्री दामी, चीमा और इमृति आकर बलिदान हो गई। यह सुनकर भाई अणदा, चाचा आये और उन्होंने भी दुष्टों के सामने वृक्ष रक्षा के लिये अपनी भेंट चढ़ा दी। वीर पुत्री करमां और गौरां ने भी इसी तरह अपने प्राण गवांकर

और वीर गति को प्राप्त हो गई परन्तु वृक्ष नहीं कटने दिये।

किसना- जब ये हाल है, तो छोड़ दो। उन्हें देखता हूँ कि इन वृक्षों को काटने वाले कौन है?

(तर्ज राधेश्याम)

है वह नीच गिरधरदास कहाँ, जो वृक्ष काटने आया है।
संग में उसके वे वीर कहाँ, जो सेना को लाया है।।
कौन-कौन हैं और सभी, जरा तो मुझको दिखलाओ।
ये किया इरादा है कैसा, यह वृक्ष काटना बतलाओ।।

महामंत्री- अरे वीर कहाने वाले! जरा सम्भलकर अरमान में इतना क्यों फूलकर गरज रहा है।

शेर

मरने की ताकत रखता है, ओ बिश्नोई वीर संभल जाना।
रक्षा में हो जो तेरे, उनका भी ध्यान हृदय लाना।।
ये चमचमाती तलवार अभी, जब मेरे हाथ आयेगी।
बच न पाये गर्दन तेरी, धड़ से अलग हो जायेगी।।

किसना- भाई ऊदा! क्या करूँ? समझ में नहीं आता है। अब ज्यादा न कहकर बलिदान होना ही उत्तम है। क्योंकि-

शेर

हरिश्चन्द्र ने सत्य के हित, कष्ट अनेक उठाया था।
निज सुत नारी बेचकर, अपना धर्म बचाया था।।
धर्म हेतु मोरध्वज ने, सुत पर शस्त्र चलाया था।
कर टुकड़े संतान शस्त्र से, नेत्र नीर नहीं लाया था।।
रुकता है क्यों अरे हाथ में, उठा कुल्हाड़ी देता हूँ।
अलग शीश धड़ से कर दे, बलिदान वृक्ष पर होता हूँ।।
अरे अधर्मी! तूं अपना वार कर।

(बलिदान होना)

महामंत्री- अरे! तूं क्या देख रहा है? अपने प्राण क्यों नहीं गमाता? अगर मौत से डरता है और अपना जीवन सुख से बिताना चाहता है तो हम कुछ धन लेकर तुझे छोड़ भी सकते हैं। मरने वाले अकारण ही मर गये तो क्यों फिजूल अपने प्राण गंवाता है।

ऊदा- अरे नीच! तूं क्या इतना प्राणों का लोभ देता है?

शेर

जकड़ना चाहता है, सिंह को सामान डोरी में।
बुलाता सिन्धु को, स्थान देकर कटोरी में।।
चलाना चाहता है नाव को, नादान मोरी में।
बिठाना चाहता है शेष को, मूरख कमोरी में।।
देता है लोभ हमको, न इच्छा एक पाई की।
बनाता मोम की बट्टी, चाहता लज्जत मिठाई की।।
घड़ियाँ मौत की हैं सामने, मैं मित्र जानूँगा।
काट दे इस शीश को, उपकार जानूँगा।।
बिश्नोई आन है मुझको, अरु धर्म की सौगन्ध।
कसम खाता हूँ मैं गुरुदेव, सत्कर्म की सौगन्ध।।
कितना ही भय तूं दे, मैं नहीं पग पीछे हटाऊँगा।
वृक्ष रक्षा के लिये ही, बलिदान होऊंगा।।

अरे सैनिको! मुझे भी मारकर अपने हाथ मेरे खून से धो लो।

महामंत्री– सैनिको! अपना प्रहार करो।

(ऊदाजी का बलिदान हो जाना)

सोलहवाँ दृश्य

(खेजड़ली ग्राम के चौराहे पर खड़े होकर ग्रामवासियों का वार्तालाप करना)

रतना, अमरा एवं पदमल का ऊँट पर आना।

ग्रामीण 1 – बिश्नोई धर्म की जय। भगवान जम्भेश्वर की जय। प्राण दे देंगे, परन्तु वृक्ष नहीं कटने देंगे। खेजड़ी नहीं कटने देंगे।

रतना– भाई अमरा! आज चेहरे पर बड़ी प्रसन्नता है। मालूम पड़ता है कोई खुशी का कार्य करके आ रहे हो। भाई! यह तो बतलाओ इस ऊँट पर पीछे बैठी हुई यह कौन है?

अमरा– भाई रतना! तुम्हें मालूम नहीं है! आज से तीन वर्ष पहले मेरा विवाह इस ऊँट पर पीछे बैठी हुई, इस सर्वांग सुन्दरी वीर नारी पदमल के साथ हुआ था। यह सम्पन्न घराने की पुत्री है। भाई रतना! आज ही मैं इसे मुकलावा करके घर लौट रहा हूँ।

रतना– भाई अमरा! बहुत ही खुशी की बात सुनाई। मेरा भी यह परम सौभाग्य है कि आज इस सारस के समान जोड़ी के रूप में

अचानक दोनों के दर्शन हुए।

अमरा– भाई! ये जोरों की आवाज कहाँ से आ रही है। बिश्नोई धर्म की जय। भगवान् जम्भेश्वर की जय। प्राण दे देंगे, परन्तु खेजड़ी नहीं कटने देंगे। ऐसे जोशीले नारे कौन लगा रहा है? जरा जाकर तो देखो, ये कौन हैं? लौटकर ये तुरन्त खबर दो कि आखिर में ये क्या बात है?

(रतना का जाकर देखना)

रतना– अरे ये क्या कुछ हत्यारे हाथ में कुल्हाड़ी लिये खड़े हैं।सैकड़ों वृक्ष खून से लथपथ हैं। कई वीर बिश्नोई नर-नारी बाल बच्चों की गर्दन अलग-अलग वृक्षों के पास पड़ी हुई हैं। मालूम पड़ता है इन अत्याचारियों ने वृक्षों के काटने का साहस किया और इन वीरों ने धर्म पर अपने प्राण देना उचित समझ बलिदान हो गये। भाई अमरा को जाकर इसकी सूचना दे देता हूँ।

(रतना का दौड़ते हुए अमरा के पास जाना)

अमरा– भाई रतना ये क्या बात है, दौड़ते आ रहे हो। कुछ घबराये से मालूम पड़ते हो। चेहरा उदास सा हो रहा है। नेत्रों में क्रोध से भरी लाली छा रही है। शीघ्र बताओ, वहाँ जाकर तुमने क्या देखा है?

रतना– भाई अमरा मैंने जाकर देखा थोड़ी सी दूरी पर खेजड़ी के बाहर के बगीचे में कुछ हत्यारे हाथों में कुल्हाड़ियाँ लिये खड़े हैं। बगीचे के अधिकांश वृक्ष खून से लथपथ हैं। प्रत्येक वृक्ष के पास कई वीर बिश्नोई नर-नारियों, वृद्ध-युवकों, बालकों की गर्दन-धड़ अलग-अलग पड़ी हैं। भाई इस दृश्य को देखकर मुझे ऐसा लगा कि इन हत्यारों ने वृक्षों पर प्रहार किया है और धर्म रक्षा के बल पर वीरों ने अपने प्राण बलिदान कर दिये हैं, एवं करते जा रहे हैं।

(अमरा का सिर पर हाथ रखकर घबरा जाना)

अमरा– अरे! मैं यह क्या सुन रहा हूँ? सुनकर मेरा हृदय फट क्यों नहीं जाता? अब मैं जी कर भी क्या करूँगा।

(चेहरे को देखकर पदमल का कहना)

पदमल– स्वामिन! ये क्या? चेहरे पर उदासी एक दम क्यों छा गई और

जोश में आ गये, भौंहें टेढ़ी हो गई।

अमरा– प्रिये! कुछ मत कहो। अब सुनने की कोई गुंजाइश नहीं है। मैं वीर बिश्नोई की संतान हूँ। जब सारे वृक्षों पर बलिदान होकर मोक्ष के अधिकारी बन गये, तो मैं भी अब जी कर क्या करूँगा? जाऊँगा और अपना सर्वस्व अर्पण कर दूँगा।

पदमल– स्वामिन! यह क्या कह रहे हो? विवाह के बाद मुझे पीहर से आज ही मुकलावा करके ला रहे हो। आज ही मेरे सुहाग का दिन है। घर पर तो पहुँचे ही नहीं मध्य में ही बलिदान की खबर सुनकर एकदम युद्ध के मैदान में कूदने का विचार कर लिया। आखिर मेरे भावी जीवन का क्या होगा? किसके बल पर मैं शेष जीवन व्यतीत करूँगी।

अमरा– प्रिये! अब सोचने समझने का समय नहीं है।
भगवान् जम्भेश्वर द्वारा चलाये पावन श्री बिश्नोई धर्म की मर्यादा रखने के लिये ही हम अपने प्राणों की परवाह नहीं करेंगे। शायद भगवान् ने मुझे इसी दिन तक के लिये पैदा किया है।

(तर्ज-राधेश्याम)

यह गाढ़ा रंग है जो चढ़ गया, इस हृदय रूपी दर्पण पर।
सच्ची ये कामना पूरी हो, उतरेगी उत्तम साधना पर।।
गुरुदेव ने कृपा करके, यह तत्त्व बात बतलाई है।
आवागमन मिटाने की, यह सरल रीति सिखलाई है।।
माने नहीं उपदेशों को, तो बने नरक का गामी है।
जो न होय बलिदान धर्म हित, सच्चा नमक हरामी है।।

प्रिये! इसमें रत्ती बढ़ेगी नहीं और तिल घटेगा नहीं। मैं चला। तुम वीर पुरुष की नारी हो। धर्म मर्यादा पालते रहना। मेरे वृद्ध माता-पिता की सेवा करते रहना। अभी मैं तुम्हारी माँग पृथ्वी की रज से भरता हूँ। यदि मैं जीवित लौटा, तो तुम्हारी माँग सिन्दूर से भरूँगा। एक बात स्मरण रखना। चाहे प्राण चले जाय पर धर्म मर्यादा से विचलित नहीं होना। तुम एक बार हँसकर मुझे विदाई दो।

पदमल– धन्य हो स्वामी! जब आपमें इतना धर्म प्रेम है, तो जाओ! सहर्ष जाओ! अब इधर की कोई चिन्ता मत करो। मैं आपके चरण छूते हुए आपकी एवं धर्म की सौगन्ध खाकर कहती हूँ कि मैं

आपके दिये गये उपदेशों का आजीवन पालन करती रहूँगी। जाओ! प्रेम पूर्वक जाओ! बिश्नोई धर्म रक्षा एवं वृक्ष रक्षा तुम्हारी राह देख रही है। लो! मैं हर्ष पूर्वक तुम्हें विदाई देती हूँ।

(रतना और अमरा का बगीचे में जाना)

अमरा– अरे दुष्टों! मेरा भी सिर काटकर आत्मा को शांति दो।
(अमरा का बलिदान हो जाना और रतना का दौड़कर पदमल को सूचना देना)

पदमल– कहो भाई रतना! स्वामी बगीचे की ओर गये थे। उनका क्या हाल है?

रतना– क्या कहूं? कुछ कहा नहीं जाता है। भाई अमराजी बगीचे में गये थे। वहाँ का सब हाल देखा और खेजड़ी वृक्ष पर अपना सिर कटवा डाला। अत्याचारियों को जरा भी दया नहीं आई और उन्होंने उनका सिर धड़ से अलग कर दिया।
(पदमल का हाय स्वामी! कहकर मुर्च्छित होकर गिर जाना। कुछ देर बाद होश में आना और कहना)

पदमल– धन्य हो स्वामी! आपने सांसारिक मोह ममता का ध्यान न रखते हुए बलिदान होकर वीरगति प्राप्त की। ऐसे अवसर पर मैं जीकर क्या करूँगी? अब तो पति के मार्ग पर चलना ही उत्तम है।

(जाकर पति के सिर को गोद में लेकर कहना)

पदमल– अरे नीच अधम हत्यारों तुमने ये क्या किया?

शेर

पाप का टीका लगाया, तुमने अपनी आन पर।
बेहया बेशर्म थू-थू है, झूठी तेरी शान पर।।
खून खच्चर के लिये, दुष्ट तुम पैदा भये।
बनके शत्रु धर्मियों के, एक दम तुम खा गये।।

शेर

महामंत्री– सहता हूँ सिर झुकाकर, आज सब कड़वे वचन तेरे।
पीता हूं विष के घूँट को भी, ऐसे नारी वचन तेरे।।
अगर नारी न होती तूँ, तो सब लेखा चुका देता तेरा।
नहीं भाव आटे दाल का, सब तुझको बता देता तेरा।।

शेर

पदमल– अरे नीच तू तो क्या, फौलाद का खम्भा हिला दूँगी।
अधर्म की जड़ें भी हैं खोखली, करके दिखा दूँगी।।
जान ले धर्म पर मरने से ही, हमारा कल्याण है।
धर दे कुल्हाड़ी शीश पर, ऐलान है ऐलान है।।

शेरमहामंत्री– सोचकर दे गले में, नाग को लिपटा न तूँ।
क्यों कूदती है आग में, पर्वतों से टकरा न तूँ।।
नाश की अग्नि बनके, और जलाते जायेंगे।
काल की सूरत को धर, के और खाते जायेंगे।।
अरे नादान! तूँ भी क्या देख रही है? बलिदान क्यों नहीं हो जाती?

पदमल– अरे पापी! अधम बहुत कह चुकी अंतिम सुन तूँ।

शेर

कड़वे शब्द ये तेरे, मुझसे सहे जाते नहीं।
मौत के भय से हम, कभी घबराते नहीं।।
इस तरह ये वृक्ष पर, गर्दन रख देती हूँ मैं।
धर्म मर्यादा के लिये, प्राण दे देती हूँ मैं।
हे अधम अपनी कुल्हाड़ी का प्रहार कर।
(बलिदान हो जाना)

सत्रहवाँ दृश्य

(ग्रामीणों की आपस में बातचीत)

रतना– भाई श्री रामा और समस्त वीर बिश्नोइयो! अत्याचार! भयंकर अत्याचार! कुछ भी समझ में नहीं आता।

रामा– अरे भाई रतना आखिर में क्या बात है? कहो तो सही।

रतना– अरे भाईयों! जरा जाकर तो देखो! जोधपुर नरेश के महामंत्री श्री गिरधरदास राजाज्ञा से सेना लेकर फिर से खेजड़ली ग्राम में खेजड़ी वृक्षों को काटने के लिये बगीचे में आया और सेनिकों द्वारा वृक्ष कटवाना आरम्भ किया। वृक्षों के कटने की आवाज सुनकर खेजड़ली ग्राम एवं आसपास के चौरासी ग्रामों के हजारों बिश्नोई नर–नारी, वृद्ध, युवक बच्चे–बच्चियां तक वृक्ष रक्षा के लिये बगीचे में पहुँच गये। धर्म की मर्यादा पालते हुए 363 उनमें से बलिदान हो गये। इसके प्रभाव से हा–हाकार मच

गया है। खून से भरी लोथें और सिर इधर–उधर पड़े हैं। अरे भाईयो! चलो! हजारों की संख्या में तत्काल चल कर वृक्षों से प्रेम का परिचय दो और जोर–जोर से नारे लगाओ। बोलो एक साथ बिश्नोई धर्म की जय। भगवान जम्भेश्वर की जय। प्राण दे देंगे, परन्तु वृक्ष नहीं कटने देंगे। वृक्ष रक्षा.....करेंगे, करेंगे। वृक्षों को नहीं काटने देंगे, नहीं काटने देंगे।

गिरधरदास– सैनिको! बड़े ही जोरों के साथ हल्ला हो रहा है। मालूम पड़ता है, हजारों बिश्नोई नारे लगाते इसी ओर आ रहे हैं। सैनिको! अब क्या करें?
यह भयंकर दृश्य देखा नहीं जाता। इस तरह ये वीर बलिदान होते जा रहे है, जिन्हें मरने का तनिक भी भय नहीं है। उधर ये देखते–देखते 363 वीर आत्माएँ बलिदान हो चुकी हैं। इतनी बड़ी हत्या देखकर मेरा हृदय घबरा गया है। मुख सूखा जाता है। शरीर कम्पायमान और पाँव थर–थर काँप रहे हैं। आँखों के सामने अंधियारी आ रही है। एकदम घोड़ा तैयार करो और भाग चलें।

सैनिक 1 – सत्य है महामंत्रीजी! उस दिन से आज की आवाज कई गुना बढ़ी है और जोश भरी सुनायी दे रही है। आँख खोल कर, जरा उधर तो देखो। जोशीले नारे लगाते हुए हजारों की संख्या में लोग इधर आ रहे हैं। अब अपनी खैर नहीं है। सेना को शीघ्र ही लौटने की बिगुल द्वारा सूचना दे दो और एक दम घोड़े पर सवार होकर भाग चलो।

सैनिक 2 – अरे ये क्या हुआ? भागने की शीघ्रता में महामंत्रीजी एक खेजड़ी वृक्ष से टकराकर परमधाम को सिधार गए। इस लोथ को मैं कहां ले जाऊँ? यहीं पड़ा रहने दूँ। यहीं पड़ा रहने दूँ। अब लम्बे पाँव पसार कर इस दुर्दशा में क्यों सोये हो? अब सोवो गहरी नींद में सोवो। कोई उठाने वाला नहीं है। करा जैसा भरा। धर्म में हस्तक्षेप करने का मजा खूब चखा। अब आपको गिद्ध, चील, कौए, जंगली जानवर ही भोग लगायेंगे। धिक्कार है तुझे जो हठ करके ऐसी दशा करवायी। इस क्रिया से मैं तो बच भागूँ और अपनी रक्षा करूँ।

अठारहवाँ दृश्य

स्थान महल

(महाराजा अभयसिंह महल में सिंहासन पर बैठे हैं। सेवा में दो दूत खड़े हैं।)

दूत 1– महाराजाधिराज श्री अभयसिंहजी के जीवन की जय हो।

दूत 2– महाराजाधिराज श्री अभयसिंहजी के जीवन की जय हो।

महाराजा– आयुष्मान हो सेवको–कहो क्या समाचार है? ज्यादा समय बीत चुका है। खेजड़ली ग्राम से अभी तक कोई समाचार प्राप्त नहीं हुए हैं। क्या कारण है?

(इतने में एक सैनिक का प्रवेश)

सैनिक– दूतवरो! यह बताओ कि क्या महाराजा महल में हैं? यदि हैं तो उन्हें यह सूचना दो कि खेजड़ली ग्राम से सब सैनिक लौट आये हैं।

दूत– (महाराजा को प्रणाम करके कहना) महाराजा! खेजड़ली से सब सेना लौट आयी है और यह समाचार लेकर दो सैनिक आपसे मिलने के लिये दरवाजे पर खड़े हैं। आज्ञा है? कृपा कहिये।

महाराजा– उन्हें महलों में आने दो।

सैनिक 1 व 2 – (एक साथ) महाराजाधिराज श्री जोधपुर नरेश के जीवन की जय हो।

महाराज– आयुष्मान हो सैनिकों कहो खेजड़ली ग्राम में वृक्ष कटवाने गये थे, वहाँ के क्या समाचार हैं? महामंत्री श्री गिरधरदासजी राजाज्ञा और सैनिक लेकर खेजड़ली ग्राम में वृक्ष कटवाने गये थे। खेजड़ी के सब वृक्ष कट कर कोयला तैयार हो ही गया होगा। साथ-साथ यह भी बताओ इस समय महामंत्री कहां पर है? उन्हें आकर पहले मुझसे मिलना था। क्या कारण है, वे अभी तक क्यों नहीं आये? तुम चुप कैसे हो? बोलो!

सैनिक 1– महाराजा! महामंत्री की हठधर्मी से आपकी आज्ञा पाकर हम लोग खेजड़ली ग्राम में खेजड़ी वृक्षों को काटने की नियत से गये थे। परन्तु एक भी वृक्ष नहीं कटवा सके।

महाराजा– क्यों ऐसा क्यों हुआ?

सैनिक 1 – महाराजा ज्योंही हमनें चार-चार की टुकड़ियों में वृक्षों के काटने का आदेश दिया त्योंही बच्चे, बूढ़े, युवक, नर-नारी एकदम दौड़े और एक-एक वृक्ष पर सब अपने-अपने सिर कटवाकर बलिदान हो गये पर वृक्षों को नहीं काटने दिया।

सैनिक – अहा! हे राजन्! इस तरह 363 वीर बिश्नोई अपना बलिदान दे चुके हैं और इस तरह बलिदान की सूचना खेजड़ली के आसपास के चौरासी बिश्नोई ग्रामों में दी जा चुकी है। सूचना पाते ही हजारों वीर बिश्नोई नर-नारी खेजड़ली ग्राम के विशाल मैदान एवं बगीचे में एकत्रित हो गये हैं और होते जा रहे हैं। उनका संगठन देख हमारी हिम्मत छूट गई। हम भागकर पुनः जोधपुर आ गये हैं।

महाराजा– महामंत्री श्री गिरधरदासजी इस समय कहां हैं?

सैनिक 1 – महाराज! ज्यों ही हम लौट रहे थे, भागने की शीघ्रता में घोड़े पर सवार महामंत्रीजी की एक खेजड़ी वृक्ष से टकराकर मृत्यु हो गई। इससे हमें ऐसा लगा कि मानों खेजड़ी वृक्ष ने ही उनका वध कर दिया।

महाराजा– दुःख! हार्दिक दुःख!! जो गिरधरदास जी इस गति से परलोक गये। हुआ सो हुआ। यह बताओ उन हजारों नर-नारी बिश्नोइयों का क्या विचार है? वे क्या चाहते हैं?

सैनिक 1 – वे गरज-गरजकर कहते हैं कि सवेरा होते ही चौरासी बिश्नोई ग्रामों के नर-नारी वृद्ध, युवक, बच्चे तक सब हाथ में मशालें लेकर जोधपुर के किले की तरफ ही आ रहे हैं और नारे लगा रहे हैं कि धर्म मर्यादा पालने के लिये वृक्षों को आँच मत आने दो।

सैनिक 2 – अहा हे राजन्! सब लोगों ने हृदय से स्वागत करते हुए समर्थन किया है और यह निश्चय किया है कि वे लोग आज ही रात में जोधपुर आ जायेंगे। ऐसी सूचना वहाँ के ग्राम के बिश्नोई नेता से मिली है। राजन् उनका आना निश्चित समझो।

महाराजा– सैनिकों! यदि ऐसा ही है तो उनके आने के पहले ही मैं स्वयं खेजड़ली ग्राम में पहुँच जाऊँगा और इस अपूर्व बलिदान को अपनी भूल बताते हुए उनसे क्षमा याचना करूँगा। उनके समक्ष यह घोषणा लिखित में करूँगा कि जिससे बिश्नोई ग्रामों में किसी भी पशु-पक्षी का वध न

किया जावे और न ही वृक्ष काटे जावें। आप सब मिलकर खेजड़ली ग्राम पहुँचने की शीघ्र तैयारी करो और मैं इधर आ ही रहा हूँ।

उन्नीसवाँ दृश्य

(स्थान : ग्राम खेजड़ली)

(एकत्रित बिश्नोइयों की आपस में बातचीत)

बिश्नोई नेता- भाईयो! ऐसा पता लगा है कि महाराजाधिराज जोधपुर नरेश अभयसिंहजी को यहाँ से भागे हुए सैनिकों द्वारा हमारे किये हुए इस बलिदान की सूचना मिल गई है। वे खेजड़ली ग्राम में आ रहे हैं। वे किस स्थिति में आ रहे हैं, उनका सामना करने के लिये हम सब लोग एकत्रित होकर जोशीले नारे लगावें।

बिश्नोई- लो वे रथ लेकर आ गये। राज्य के प्रमुख-प्रमुख अधिकारी भी उनके साथ हैं। सामना करने के लिये नारे लगाना प्रारम्भ करो। बोलो-

1 पावन बिश्नोई धर्म की.....जय।
2 भगवान् जम्भेश्वर की.....जय।
3 अत्याचारियों का.....नाश हो।
4 हम जान दे देंगे.....वृक्ष कटने नहीं देंगे।
5 हम धर्म से.....विचलित नहीं होंगे।
6 वृक्ष रक्षा.....करेंगे, करेंगे।

(महाराजा अभयसिंहजी द्वारा रोकते हुए कहना)

ठहरो! ठहरो!! हे जोधपुर राज्य के वीर बिश्नोई नर-नारियो! जरा ठहरो। मुझे सैनिकों द्वारा सब समाचार मिल चुके हैं। हमारे राज्य के महामंत्री श्री गिरधरदास की हठधर्मी से जो अधर्म हुआ है। 363 आत्माएँ केवल वृक्षों की रक्षा के लिए बलिदान हुई है। इस बड़े अधर्म से मेरा सिर आपके समक्ष शर्म से सदैव झुका रहेगा। इस महा अपराध के लिये मैं अपना पश्चात्ताप करता हुआ आपसे क्षमा याचना करता हूँ। इस बलिदान से यह प्रमाणित है कि आप मेरे राज्य की धर्मवीर प्रजा हैं। मैं आपसे ही सम्मानित राजा हूँ। आपके सुख-दुःख का भागी मैं ही हूँ। मैं आपको अपनी ओर से अब राजाज्ञा ताम्रपत्र पर लिखकर देता हूँ कि भविष्य में आज से मेरे राज्य के बिश्नोई ग्रामों में न तो किसी प्राणी का वध किया जायेगा, चाहे वह जंगली हो या पालतू और न ही वृक्ष काटे जायेंगे।

बल्कि मैं अपने राज्य में पर्यावरण के अन्तर्गत वृक्षारोपण करने की घोषणा करता हूँ। प्रतिवर्ष कई प्रकार के नये वृक्ष लगाये जायेंगे। जिनकी व्यवस्था एवं रक्षा की जिम्मेदारी शासन की ही रहेगी। जो 363 वीर बिश्नोई आत्माएँ वृक्षों पर बलिदान हुई हैं, उनका विश्व के इतिहास में स्वर्ण अक्षरों से एक नया अध्याय लिखा जायेगा। जब तक पृथ्वी, सूर्य एवं चन्द्रमा का अस्तित्व रहेगा, तब तक जनमानस उनकी कीर्ति गाते रहेंगे। मैं भी अपने महल में स्वयं कई वृक्ष लगाऊँगा और महल के प्रांगण में एक खेजड़ी वृक्ष लगाकर गंगा, तुलसी और गौ के समान उसका पूजन करता रहूँगा। लाओ आज ही खेजड़ी वृक्ष का रोपण करता हूँ। आओ हम सब मिलकर इस पावन भूमि खेजड़ली जहां पर लोग शहीद हो गये हैं, वहाँ पर एक सप्रसंग गीत गायें फिर वृक्षों की आरती करेंगे।

गायन

खेजड़ली धरती है ये महान्।।टेक।।
धर्म हेतु वृक्षों के बदले, हुए वीर बलिदान।
इस धरती सा कहीं उदाहरण, मिले नहीं दुनिया भर में।
राष्ट्र देख लो धर्म देख लो, और देख लो घर-घर में।
बड़ी अनोखी घटना यहाँ की, गुंजा दिया आसमान।।
यह धरती पावन है ऐसी, देवों को भी भाई है।
इस धरती की महिमा को भी, सन्तजनों ने गाई है।।
रज कण इसकी शीश चढ़ाकर और बढ़ा दो मान।
खेजड़ली धरती है ये महान्।।

खेजड़ी माता की आरती

आओ रे बिश्नोईयां भाई, आओ आओ आपाँ मिल।
वृक्षाँरी सब पूजा कराँ, खेजड़ी माता री आरती कराँ।
आओ मिल वृक्षांरा गीत सब गावाँ, झुक-झुक के थाने शीश नवावाँ।।
पर्यावरण पर ध्यान धरें, खेजड़ी माता री आरती करें।।१।।
गुरु जम्भेश्वर नियम बनाया, गाँव गाँव थाने लगवाया।।
वे ही सूं सब कारज सरे, खेजड़ी माता री आरती करें।।२।।
वृक्ष ही है सब सुख के दाता, जो जन है इनको अपनाता।।
जीवन के कई कष्ट हरे, खेजड़ी माता री आरती करें।।३।।
वृक्ष नहीं कटने पायेंगे, चाहे प्राण भले जायेंगे।।
सब मिल प्रभु से अरज करे, खेजड़ी माता री आरती करें।।४।।

363 बिश्नोई शहीदों के नाम

1. खेजड़ली

1. रामोजी	खोड़
2. अमृता बैनिवाल पत्नी रामोजी	,,
3. आसी बाई पुत्री रामोजी	,,
4. रतनी बाई पुत्री रामोजी	,,
5. भागु बाई पुत्री रामोजी	,,
6. गिरधारी पुत्र सिंधुजी	भादू
7. जीवणजी पुत्र सिंधुजी	,,
8. जीयां बैनिवाल पत्नी गिरधारीजी	,,
9. पीथोजी पुत्र गिरधारीजी	,,
10. अणदोजी पुत्र गिरधारीजी	,,
11. कानी कालीराणी पत्नी अणदोजी	,,
12. दामी पुत्री अणदोजी	,,
13. चीमा पुत्री अणदोजी	,,
14. इमरती पुत्री अणदोजी	,,
15. हरनाथजी पुत्र अणदोजी	,,
16. लाडु ईसराम पत्नी हरनाथजी	,,
17. सांवतजी पुत्र हरनाथजी	,,
18. ऊदोजी पुत्र हरनाथजी	,,
19. खिंवजी पुत्र हरनाथजी	,,
20. मनबा कंसवी पत्नी खिंवजी	,,
21. बरजांगाजी पुत्र बींजाजी	बेणियाल
22. भागीबाई पुत्री बरजांगाजी	,,
23. सबियां बाई पुत्री बरजांगाजी	,,
24. चाचाजी पुत्र बरजांगाजी	,,
25. हरजी पुत्र मुकनाजी	,,
26. मेई पत्नी मुकनाजी	,,
27. अखजी पुत्र बरजांगाजी	,,
28. उमोजी	गोदारा

29. भेरजी पुत्र दुर्गाजी	पोटलिया
30. कल्याणजी पुत्र मोटाजी	,,
31. किशनो पुत्र पेमजी	,,
32. शुकजी पुत्र पेमजी	,,
33. इशरजी	बांगड़वा
34. मगजी पुत्र इशरजी	,,
35. टावोजी पुत्र इशरजी	,,
36. सुन्दरोजी पुत्र इशरजी	,,
37. हीराबाई पुत्री इशरजी	,,
38. हरदासजी पुत्र खरतोजी	बूड़िया
39. कसुबी खोड़ पत्नी हरदासजी	,,
40. करमसिंहजी पुत्र हरदासजी	,,
41. किसनोजी पुत्र धनजी	,,
42. देदारामजी पुत्र भींवजी	,,

2. रशीदा

43. बींजोजी पुत्र हीरोजी	भादू
44. रिड़मलजी पुत्र बींजोजी	,,
45. तिजोजी	,,
46. केशोजी पुत्र कुम्भोजी	जाणी
47. हरिया गोदारी पत्नी केशोजी	,,
48. भगवानजी	,,
49. रासोजी पुत्र कलुजी	सियाग
50. नारा नैण पत्नी रासोजी	,,
51. केशोजी पुत्र रसोजी	,,

3. हुणगांव

52. जेसोजी पुत्र अकोजी	गोदारा
53. ऊदोजी पुत्र अकोजी	,,
54. केशोजी पुत्र हरदासजी	बेणिवाल
55. हेमोजी पुत्र हरदासजी	,,
56. लुणोजी पुत्र नाथोजी	,,
57. अणदोजी पुत्र नाथोजी	,,
58. मनरूपजी पुत्र खेताजी	गोदारा

59. गेनोजी पुत्र खेराजजी ''
60. गोकलजी पुत्र खेराजजी ''
61. पेमोजी पुत्र जैसोजी ''
62. लाली बाई पुत्री जैसोजी ''

4. नेतड़ा

63. सुन्दरोजी पुत्र मालजी ढ़ाका
64. साजनजी पुत्र मालजी ''
65. बीरमजी पुत्र मालजी सहु
66. दाऊजी पुत्र रूपजी ''
67. केसोजी पुत्र रामोजी भादू
68. वींजी लोल पत्नी सामोजी ''

5. बिरामी

69. सदरोजी पुत्र मनोहरजी गोदारा
70. अणदोजी पुत्र मनोहरजी ''
71. अणदु बाई पुत्री मनोहरजी ''
72. जीमां बाई पुत्री सुजोजी ''
73. सुखिया बाई पुत्री मनोहरजी ''
74. जेसाजी पुत्र धनोजी भादू
75. नाथोजी पुत्र जसवंतजी ''
76. सेरी धत्तरवाल पत्नी नाथोजी ''
77. मोटोजी पुत्र नाथोजी ''

6. लांबा

78. कचरीजी पुत्र करमचन्दजी लोल
79. पदमोजी पुत्र करमचन्दजी ''
80. भोजोजी पुत्र सुजांणजी जाणी

7. फिटकासनी

81. पांचोजी बाबल
82. रूपोजी पुत्र पांचोजी ''
83. बुधोजी पुत्र आसोजी ''
84. रुघोजी पुत्र लाधुजी ''
85. भींयोजी पुत्र नाथोजी ''
86. पीथोजी पुत्र जसोजी ''

87. तेजोजी पुत्र जसोजी ''
88. लाखोजी पुत्र अजोजी ''
89. राऊजी पुत्र अजोजी ''
90. सुजांणी पुत्री अजोजी ''
91. जेतोजी पुत्र गोरधनजी ''
92. नरसिंहजी पुत्र गोरधनजी ''
93. भींयोजी पुत्र कचरोजी ''
94. पीथोजी पुत्र भींयोजी ''
95. पदमा खोड़ पत्नी पीथोजी ''
96. नाथोजी पुत्र भींयोजी ''
97. मनोहरजी पुत्र अणदाजी गोदारा
98. रुगोजी पुत्र जीयाजी ''
99. सबलोजी पुत्र जीयाजी ''
100. भंवरजी पुत्र सुजेजी ''
101. नेती थालोड़ पत्नी भंवरजी ''
102. मनोहरजी पुत्र भंवरजी ''
103. रोहितासजी पुत्र जसजी जाणी
104. जेतोजी पुत्र जसजी ''
105. सोनी गोदारी पत्नी जेतोजी ''
106. जगोजी पुत्र रामोजी डुडी

8. गुड़ा बिश्नोइयान्

107. दामोजी पुत्र मोटलजी खावा
108. अमरोजी पुत्र पूरणजी ''
109. पांचोजी पुत्र करमोजी ''
110. भारमलजी पुत्र हरिरामजी ''
111. जीवराजी पुत्र हरिरामजी ''
112. पांचोजी पुत्र हरिरामजी ''
113. लाखोजी पुत्र किशनोजी सारण
114. रामोजी पुत्र केशोजी ''
115. करमसिंह पुत्र शंकरजी ''
116. नरबदजी पुत्र सालुजी ''
117. हीरोजी पुत्र सालुजी ''

118. केशोजी पुत्र सालुजी	,,
119. सांईदासजी पुत्र तेजोजी	,,
120. देदोजी पुत्र करमसिंहजी	माल
121. कुबोजी पुत्र भगवानजी	कड़वासरा
122. लाखोजी पुत्र आसुजी	,,
123. रायमलजी पुत्र आसुजी	,,
124. हेमराजजी पुत्र आसुजी	,,
125. सांईदासजी पुत्र सदोजी	डुडी
126. गंगारामजी पुत्र खेराज	झांग
127. सुरताणजी पुत्र चांपजी	भादू
128. अणदोजी पुत्र चांपजी	,,
129. जसोदा गोदारी पत्नी चांपजी	,,
130. देवराज पुत्र अमराजी	सियाग
131. जीयोजी पुत्र अमराजी	,,
132. केसी डगियाल पत्नी अमराजी	,,
133. चांपोजी पुत्र ऊदोजी	,,
134. रूपजी पुत्र नेतोजी	जाणी
135. अचलोजी पुत्र भोजोजी	बुरड़क
136. लुंगा सियाग पत्नी अचलोजी	,,
137. बिजी सियाग पत्नी देवराजजी	,,
138. कंवरोजी पुत्र गोरधनजी	,,
139. हीराबाई पुत्री गोरधनजी	,,

9. भगतासनी

140. दानोजी पुत्र रुगोजी	गोदारा
141. बालुजी पुत्र रुगोजी	,,
142. हरकोजी पुत्र बीरमजी	,,

10. रूड़कली

143. लाखोजी पुत्र कंवरोजी	पंवार
144. रामजी पुत्र अखजी	सींवर
145. मानोजी पुत्र अखजी	,,
146. जीवराजजी पुत्र अखजी	,,
147. खरतोजी पुत्र अखजी	,,

148. दासोजी पुत्र जगमालजी	धायल
149. रामोजी पुत्र अणदोजी	,,
150. सोनमजी पुत्र खेराजजी	अड़ींग
151. खुमोजी पुत्र खेराजजी	,,
152. मुकनोजी पुत्र रतनाजी	भादू
153. करमोजी पुत्र आसोजी	डउकिया
154. मनोहरजी पुत्र खमोजी	,,
155. देवजी पुत्र आसुजी	सीगड़
156. जीवणजी पुत्र आसुजी	,,
157. नगराजजी पुत्र भारमल	रिणवा
158. नरसिंहजी पुत्र मघोजी	गोदारा

11. पीथावास

159. किशनोजी पुत्र कलजी	कसवां
160. करमसिंहजी पुत्र कलजी	,,
161. नमोजी पुत्र रायचन्दजी	बेणियाल
162. दाऊजी पुत्र जेसाजी	,,

12. रामड़ावास

163. मानोजी पुत्र केशोजी	सियाग
164. केसू पत्नी मानोजी	,,
165. देवजी पुत्र ईशरजी	गोदारा
166. जेमलजी पुत्र हरनाथजी	,,
167. करमचन्दजी पुत्र सुरताणजी	,,
168. सुरताणजी पुत्र हेमराजजी	धायल
169. पांचोजी पुत्र मोटाजी	बेनीवाल
170. कलजी पुत्र चतुराजी	गिला
171. गोर्धनजी पुत्र चोकजी	सारण
172. हरकोजी पुत्र सीयोजी	मांझु
173. मानोजी पुत्र राजुजी	भादू
174. मेयोजी पुत्र हेमजी	,,
175. चोकजी पुत्र मनोहरजी	सहु
176. दीपां चाहर पत्नी चौकजी	,,
177. जोधारामजी	ऐचरा

178. बनराजजी पुत्र मनोहरजी — सहु

13. फींच

179. ओपोजी पुत्र गोरधनजी — मांझू
180. रामी गोदारी पत्नी आसोजी — पंवार
181. सुजांणजी पुत्र सिरदारजी — ''
182. जगनाथजी पुत्र शिंभूजी — ''
183. देऊ देवी पत्नी जगनाथजी — ''
184. तेजोजी पुत्र हाऊजी — ''
185. उगरोजी पुत्र पोलाजी — गोदारा
186. सेरु ज्वरण पत्नी पोलाजी — ''
187. पंचाणजी पुत्र पोलाजी — ''
188. उदोजी पुत्र केसोजी — ''
189. गंगा भादु पत्नी उदोजी — ''
190. अणदोजी पुत्र खेतोजी — चोटिया
191. सोमी पंवार पत्नी खेतोजी — ''
192. सुन्दरोजी पुत्र किशनोजी — गोदारा (माडवत)
193. इदा कसवी पत्नी सुन्दरोजी — ''
194. जगमालजी पुत्र सुन्दरोजी — ''
195. हेमराजजी पुत्र सुन्दरोजी — ''
196. अणदोजी पुत्र सुन्दरोजी — ''
197. जीवराजजी पुत्र फतेहजी — इसराम
198. सांवलजी पुत्र बागोजी — खोत
199. संवतजी पुत्र बागेजी — ''

14. धवा

200. पीपोजी — ढ़ाका
201. बाली बणियाल पत्नी पीथोजी — ''
202. रायचंदजी पुत्र पीथोजी — ''
203. रुपोजी पुत्र अणदोजी — ''
204. मोटोजी पुत्र फतेहजी — ''
205. गिरधारीजी पुत्र जीवणजी — खिलेरी
206. भागुजी पुत्र हेमाजी — भाडियासा
207. अणदोजी पुत्र मानजी — ''

15. डोली

208. खेराजजी पुत्र हेमजी — गोदारा
209. देवराजजी पुत्र हेमजी — ''
210. जीयोजी पुत्र अणदोजी — ''
211. दीपा खोड़ पत्नी जियोजी — ''
212. रतनोजी पुत्र हरजी — डारा
213. समेलजी पुत्र हरजी — ''
214. लाडो सारण पत्नी समेलजी — ''
215. हरजी पुत्र भारमलजी — ''
216. दिवराजजी पुत्र भारमलजी — ''
217. खिंवजी पुत्र हीरजी — ''
218. कलु सारण पत्नी खिंवजी — ''
219. अरमी पुत्री खिंवजी — ''
220. महेसजी पुत्र हरचंदजी — ''
221. लालुजी पुत्र बिठलजी — जांगु
222. रतनोजी पुत्र जेताजी — जाणी

16. खडालो

223. रतनोजी पुत्र जीतोजी — कसवा
224. राजूजी पुत्र जीतोजी — ''

17. भवाद

225. मगोजी — कसवा
226. सवाईजी पुत्र मगोजी — ''
227. अजोजी पुत्र मोटोजी — बोला
228. सुन्दर गोदारी पत्नी अजोजी — ''
229. सुन्दरोजी पुत्र अजोजी — ''

18. कोसाणा

230. हरजी पुत्र चोकजी — कसवां
231. भीखजी पुत्र चोकजी — ''
232. नाथी पंवार पत्नी भीखजी — ''
233. टिकुजी पुत्र चोकजी — ''
234. धनजी पुत्र भगवानजी — जांगु
235. टिकुजी पुत्र बस्तीजी — ''

236. नारायणजी पुत्र मोटाजी	मुरिया
237. हीरा राहड़ पत्नी नारायणजी	,,
238. किसनोजी पुत्र साजनजी	सियाग
239. साजनजी	,,
240. मोहनजी	नैण

19. धोरू

241. श्यामजी पुत्र शिम्भूजी	गोदारा
242. नारां धायल पत्नी शिम्भूजी	,,
243. सांईदास पुत्र रासोजी	,,
244. नाथोजी पुत्र सिमरथजी	डूडी
245. रेड़ोजी पुत्र सिमरथजी	,,
246. दुर्गोजी पुत्र सिमरथजी	,,

20. दोहोरियों

247. उदोजी पुत्र हीरजी	भादू
248. जीयारामजी पुत्र अणदोजी	,,
249. सालोजी पुत्र अणदोजी	,,

21. जालीमलिया

250. भाऊजी पुत्र मगजी	डऊकिया

22. डांवरो

251. देदोजी पुत्र सुजाणजी	कड़वासरा
252. बीरा डूडण पत्नी सुजांणजी	,,
253. साजनजी पुत्र आसोजी	राहड़
254. किसनोजी पुत्र दरियाणजी	सारण

23. नांदिया

255. बस्तीजी पुत्र चांपेजी	इसराम
256. हरचंदजी पुत्र मानोजी	पूनियां
257. ठाकरजी पुत्र मानोजी	,,

24. हींगुणियां

258. रामोजी पुत्र अमरोजी	राहड़

25. तिलवासणी

259. मोटाजी पुत्र अलोजी	खोखर
260. करणोजी पुत्र अलोजी	,,

261. खिवणी नैण पत्नी बींजाजी	,,
262. पांचोजी पुत्र बींजाजी	,,
263. दमु नैण पत्नी पांचोजी	,,
264. केशोजी पुत्र बींजाजी	,,
265. नाथी नैण पत्नी केशोजी	,,
266. खुमाणजी	नेण
267. किरपोजी	,,
268. खिंवणी बाई	,,
269. गोपालदासजी	,,
270. थानी बाई	,,
271. तेजोजी पुत्र गोहदजी	,,
272. सजनी थालोड़ पत्नी तेजोजी	,,
273. लालोजी पुत्र देदाजी	,,
274. हरदासजी पुत्र धनजी (टुईया)	,,

26. लुणावा

275. अमरोजी पुत्र जीवणजी	डूडी
276. देदोजी पुत्र नरसिंहजी	,,
277. नारायणजी पुत्र देवराजजी	,,
278. दुरगो पुत्र मोटोजी	,,

27. बावरला

279. उगरोजी पुत्र नगराजजी	सारण
280. सादुलजी पुत्र सावलजी	,,
281. देवोजी पुत्र रामोजी	,,

28. जुड

282. बस्तीजी पुत्र ईशरजी	लोल
283. बिरमजी पुत्र ईशरजी	,,
284. बोगोजी पुत्र कुशलोजी	,,
285. करनोजी पुत्र कुशलोजी	,,
286. माहोजी पुत्र कुशलोजी	,,
287. रोहितासजी पुत्र जसोजी	जाणी
288. खियोजी पुत्र जसोजी	,,
289. रायचन्दजी पुत्र पिथोजी	,,

290. रूपोजी पुत्र पिथोजी ''

29. ओलवी

291. दानोजी पुत्र परमानन्दजी चाहर
292. चुडजी पुत्र पुजवांणजी ''
293. दीवराजजी पुत्र नाथोजी ''

30. बाला

294. हरिचन्दजी पुत्र दुर्गाजी सहू
295. नरसिंहजी पुत्र कुम्भोजी ''
296. दिपा खावी पत्नी नरसिंहजी ''

31. जोलियाली

297. चोलोजी पुत्र भारमलजी तांडी
298. रेसी सारण पत्नी राजुजी ''
299. जगनाथजी पुत्र रायचंदजी बणियाल
300. आसी पत्नी रामचंदजी ''
301. पांचाणाजी ''
302. खेमी सारण पत्नी पांचाणाजी ''

32. बीसलपुर

303. हेमराजजी पुत्र सामेजी बणियाल
304. मदजी पुत्र हेमराजजी ''
305. सुवट ढ़ाकी पत्नी हेमराजजी ''

33. मतोड़ा

306. सादोजी पुत्र गोपालजी खिलेरी
307. भारमलजी पुत्र चांपोजी ''
308. बदरीजी पुत्र चांपोजी ''
309. सुजी नैण पत्नी भारमलजी ''
310. जेसोजी पुत्र बिरमजी जाणी
311. केशोजी पुत्र बिरमजी ''

34. ददड़वा

312. किशनोजी पुत्र साजनजी सियाग
313. रतनोजी पुत्र साजनजी ''

35. हिंगोली

314. नेतोजी पुत्र राजेजी सहू

315. आसी बुडियाणी पत्नी नेतोजी ''
316. मोटोजी पुत्र भारमलजी कुपासिया
317. कुशलोजी पुत्र जीयोजी ''
318. देदोजी पुत्र केशोजी बणियाल
319. नाथोजी पुत्र केशोजी ''

36. अरटिया

320. कुशलोजी पुत्र अणदोजी डारा
321. बालुजी पुत्र भागचन्दजी ''
322. रतनोजी पुत्र गणेशजी गोयत
323. हीरी पंवार पत्नी रतनोजी ''
324. लाखोजी पुत्र हरखोजी ''

37. बेरु

325. कंवरोजी पुत्र गणेशजी सारण
326. रूपा खोड़ पत्नी कंवरोजी ''
327. लादुजी पुत्र गुणेजी ''
328. मगोजी पुत्र गोहदजी ''

38. जांगलू

329. धनराजजी बणियाल
330. हरदासजी पुत्र दावदजी गायणा
331. विशनोजी पुत्र हरदासजी ''
332. रामचन्द्रजी पुत्र तेजोजी ''
333. जेति अगरवाली पत्नी तेजोजी ''

39. बेगड़िया

334. देईदासजी पुत्र नाथुजी धत्तरवाल
335. अखजी पुत्र नाथुजी ''

40. हाणिया

336. नाथोजी पुत्र करमचन्दजी खीचड़

41. सिरमांडी

337. नाथोजी गोदारा
338. करमसिंहजी ''

42. सामड़ाऊ

339. नरसिंहजी ईशरवाल

43. पांचला

340. रुगोजी पुत्र भगवानजी — पंवार
341. दुर्गोजी पुत्र भगवानजी — ''

44. बुरचा

342. रूपोजी पुत्र धनजी — खिलेरी
343. रेड़ोजी पुत्र पोलोजी — भंवाल
344. भोजोजी पुत्र पोलोजी — ''
345. मोटोजी पुत्र धनराजजी — ''

45. तापू

346. महेशजी पुत्र रामचन्द्रजी — सारण
347. अणदोजी पुत्र शंकरजी — खिलेरी

46. कुड़ी

348. केसोजी — जांगू

47. जाटियासर

349. तेजोजी — सियाग

48. भाकरासणी

350. चाम्पोजी पुत्र बरजांगजी — सियाग

गांव व जाति (अज्ञात)

351. मोटोजी
352. पांचोजी
353. पीथोजी
354. हरकु बाई
355. सुन्दर बाई
356. करमी बाई
357. गोरां बाई
358. हरजी
359. हरुपजी
360. गुगतोजी
361. तेजोजी
362. उदोजी
363. कानोजी।